तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 3, फरवरी 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

भीतर फैला अंधकार मिटाती
शिक्षा ही सही राह दिखाती

म्हारा हरियाणा सक्षम हरियाणा

सक्षम की अब बयार चली,
गंगा की ज्यों धार चली,
सक्षम करने का सपना लेकर,
हरियाणा की सरकार चली।

बच्चे, शिक्षक, बीईओ, डीईओ,
सक्षम रूपी अमृत पियो,
कामयाब इंसान बनो तुम,
और जग में सम्मान से जियो।

सक्षम की आँधी को,
कोई रोक नहीं पाएगा,
तजकर दुर्बलताएँ अपनी,
हर बच्चा सक्षम बन जाएगा।

बन सक्षम आगे जाना है,
छोड़ो सब कुछ पढ़ना और पढ़ाना है,
सुभाष, पटेल, भगत, गाँधी ज्यों,
जग में नाम कमाना है।

हम सबने देखा इक सपना,
हर बच्चा हो सक्षम अपना,
किस्मत से नहीं मिलता सब कुछ,
मेहनत में पड़ता है तपना।

सक्षम के लाभ बहुत हैं,
सक्षम उत्तम योजना है,
किसने कितना समझा है,
बस यही इसमें खोजना है।

बनेंगे सक्षम, करेंगे सक्षम,
नहीं रहेंगे अब हम अक्षम,
कुछ और चलो, अभी चलना है,
मंजिल के बहुत पास हैं हम।

अज्ञान है तम, सक्षम प्रकाश,
आओ मिलकर करें प्रयास,
दृढ़ निश्चय जो रखता मन में,
पूरी हो उसकी हर आस।

डाइट व एससीईआरटी,
हर सम्मान की अधिकारी हैं,
दिन-रात निरंतर जुटी हुईं,
सब इनके आभारी हैं।

सबने मिलकर जोर लगाना,
इस मिशन को सफल बनाना,
कह सकेंगे गर्व से सारे,
म्हारा हरियाणा सक्षम हरियाणा।

सुनील प्रभाकर
हिन्दी अध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, सुलखनी
जिला-हिसार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

फरवरी 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
रामबिलास शर्मा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
पी के दास
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.राकेश गुप्ता
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डी के बेहेरा
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

राजीव प्रसाद
संयुक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा,
हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जलो वहाँ, जहाँ जरूरत हो,
उजालों में चिरागों के मायने
नहीं होते"

» योजनाबद्ध ढंग से हो परीक्षा की तैयारी 5
» बच्चों ने गौर से सुनी 'परीक्षा पे चर्चा' 6
» पूरे शिक्षण तंत्र को सक्षम बनाने की कवायद 8
» छात्राओं ने सीखे जीवन कौशल विकास के गुर 11
» झज्जर के 'सक्षम' बनने की गौरव-गाथा 12
» लीजिए आ गई 'सक्षम क्रांति एक्सप्रेस' 14
» 'असर' का असर 16
» बच्चों ने देखे केरल के समुद्री तट 18
» 22 भाषाओं के संगम में डुबकी लगाई विद्यार्थियो ने 22
» चौथी कक्षा की नन्ही गायिका : साक्षी सैनी 24
» पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहे शिक्षण 25
» खेलों के दम पर बदल दी स्कूल की तस्वीर 26
» कागज़ की कहानी 30
» विद्यालय 31
» Saksham Ghoshna The Mega Round 32
» Saksham Kaksha An Android application... 34
» Learning Enhancement Programme 36
» Saksham Officer of the Week 38
» Leave a good heritage for your children 39
» Should students be rewarded for attending... 40
» Help your children Educate better after school ... 44
» SOGOL an Experiential Learning 45
» Quiz 49
» आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ चित्रः प्रदीप मलिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

उल्लास से 'परीक्षा-पर्व' का अभिनन्दन

सत्र समापन की ओर है, परीक्षाओं ने दस्तक दे दी है। अध्यापकगण गंभीरता से जुटे हैं, माता-पिता के मस्तक पर चिंता की रेखाएँ हैं कि उनके 'लाल' परीक्षाओं में बेहतरीन प्रदर्शन करें । कुछ तो इतने चिंतित है कि मानो उन्हें ही परीक्षा में बैठना हो। इसी चिंता के परिणामस्वरूप घर में ऐसा माहौल बन जाता है कि जैसे परीक्षाएँ, नहीं, कोई हौवा आया है।

साल भर मेहनत की है तो परिणाम भी अच्छा ही होगा। चिंता छोड़िए, क्रमबद्ध, योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने पर कठिन से कठिन काम भी सध जाता है। पूरे मनोयोग व आत्मविश्वास से परीक्षा की तैयारी कीजिए, परंतु कुछ देर के लिए अपनी पढ़ाई के कमरे से बाहर निकल कर प्रकृति की छटा भी निहारिये। आप महसूस करेंगे कि परीक्षाओं के इस मौसम में नये रूप-रंग में सजी-धजी प्रकृति भी आपके लिए अनावश्यक चिंता से मुक्त रहने का संदेश ही लेकर आई है। वसंत का आगमन हो गया है। पेड़ों पर आए छोटे, चिकने और चमकदार नए पत्ते, वसंती बयार, गुनगुनाती धूप, खेतों में सरसों के पीले फूल देखोगे, तो ये आपकी अनावश्यक चिंताओं व तनावों को हर लेंगे।

माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने 29 जनवरी 2019 को 'परीक्षा पे चर्चा' करते हुए जो संदेश परीक्षार्थियों तक पहुँचाया है, उसे प्रदेश-भर के विद्यार्थियों को सुनाया गया है। यदि किसी कारण से आप उसे सुनने से वंचित रह गए हों तो इस अंक के माध्यम से आप तक पहुँचाया जा रहा है। इस संदेश को सुनने मात्र से आपको बहुत हद तक व्यर्थ की चिंताओं, तनावों, भ्रमों और अंधविश्वासों से राहत मिलेगी। सच तो यह है कि इन दिनों विद्यार्थी जितने अधिक तनाव-मुक्त व सहज रह पाते हैं और अभी तक अर्जित ज्ञान पर जितना आत्मविश्वास कायम रख पाते हैं, उतनी ही उनकी सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री पीके दास ने विद्यार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों के लिए कुछ टिप्स दिए हैं, वे भी इस अंक के जरिए आप तक पहुँच रहे हैं। हमें पूरा विश्वास है कि अध्यापकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों के लिए ये अत्यंत लाभकारी रहेंगे।

विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजनोत्सव इसी माह की पंचमी को आता है। वीणावादिनी माँ शारदा की अनुकंपा आप सब पर बनी रहे। आगामी परीक्षाओं के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

- संपादक

योजनाबद्ध ढंग से हो परीक्षा की तैयारी

परीक्षाओं में कुछ ही समय शेष है। यह ऐसा समय होता है जब विद्यार्थियों ही नहीं, अध्यापक और अभिभावक भी काफी तनाव में देखे जा सकते हैं। अध्यापकों और अभिभावकों का व्यवहार जाने-अनजाने विद्यार्थियों के परीक्षा-तनाव को कम करने के स्थान पर और बढ़ा देता है। माता-पिता कि द्वारा अक्सर बच्चों को ऐसी हिदायत दी जाती है कि खेल-कूद, घूमना-फिरना बिल्कुल बंद करके अधिक से अधिक समय पढ़ें, रात-रात जाग कर पढ़ें। सच मानिये ऐसी हिदायतें बच्चे के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं हैं। यदि बच्चे को देर रात तक जागने की आदत नहीं है, तो वह सहजता के साथ नहीं पढ़ पाएगा। ऐसा करने से उसके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है। जब उसकी बॉडी टायर्ड है, जब उसका माइंड टायर्ड है तो कैसे उम्मीद करें कि वह परीक्षा की अच्छी तैयारी कर रहा है। 24 घंटे पुस्तक लेकर बैठे रहने का अर्थ यह नहीं है कि बच्चा बहुत कड़ी मेहनत कर रहा है। देखने वाले को भ्रम हो सकता है कि मेहनत बहुत अच्छी हो रही है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। तभी तो अक्सर लोग ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि मेहनत तो जी-तोड़ की थी, लेकिन वैसे परीक्षा परिणाम नहीं आए। माता-पिता इस बात का ध्यान रखें कि हर बच्चे की मेहनत करने की अपनी-अपनी क्षमता है। उसकी शारीरिक और मानसिक क्षमता से अधिक बोझ उस पर डालना उचित नहीं है। इस बोझ का कुछ लाभ होने वाला नहीं है, हाँ, नुक्सान अवश्य हो सकता है।

परीक्षाओं के दिनों में इस बात की आवश्यकता होती है कि विद्यार्थी एक योजना बनाकर परीक्षा की तैयारी करें। ऐसा करने से ही विद्यार्थी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन कर पाएँगे। अनावश्यक तनाव 'सीखने की प्रक्रिया' में बाधक बनता है। दिमाग की सीखने की भी एक क्षमता है, उसके सजग रहने की भी एक लिमिटेशन है। उस पर जरूरत से अधिक बोझ बनाना किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता। यह बात विद्यार्थियों को भी समझने की आवश्यकता है और उनके अभिभावकों को भी।

अध्यापक भी कई बार जाने-अनजाने में विद्यार्थियों को परीक्षाओं के विषय में काफी भयभीत कर देते हैं। ऐसे समय तो विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाने की आवश्यकता है। ऐसा भी देखा जाता है कि कई बार अध्यापक विद्यार्थी से परेशान होकर कह देते हैं कि तुम परीक्षा में पास नहीं हो सकते। ऐसी टिप्पणी सुनकर बालमन पर क्या असर पड़ेगा, ये वे नहीं सोचते। ऐसा सुनकर तो बेचारा विद्यार्थी और भी हतोत्साहित हो जाता है। परीक्षा की जो तैयारी उसे करनी चाहिए थी, वैसी भी वह नहीं कर पाता। हीन-भावना के कारण वह ऐसा समझने लगता है कि अपनी तैयारी से तो वह परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता। ऐसी अवस्था में उसे लगता है कि नकल या अन्य अनुचित साधनों का इस्तेमाल करके ही वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकता है, यानी वह अध्ययन की योजनाओं में नहीं, नकल की योजनाओं में जुट जाता है। हम सभी को यह सोचना है कि हमारा कोई भी विद्यार्थी इस दशा से न गुजरे।

परीक्षाओं में कुछ समय ही शेष है, अध्यापक यह देखें कि उनके विद्यार्थियों को कितना आता है और कितना इस सीमित समय में सिखाया जा सकता है। पाठ्यक्रम के उस भाग पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाए, जो परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, जिसे कम समय में सीख कर अधिक अंक अर्जित किए जा सकते हैं।

योजनाबद्ध ढंग से तैयारी कराई जाएगी तो मुझे पक्का विश्वास है कि हर विद्यार्थी पास-प्रतिशत अंक अवश्य अर्जित कर सकता है। हमारा प्रश्न-पत्र 100 अंकों का है। इसमें 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के हैं। अमूमन 10-12 अंक तो हर विद्यार्थी उन में से अर्जित कर ही लेता है। अब रही बात 80 अंक के प्रश्न-पत्र की, पास-प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए इसमें से उसे 20-25 अंक ही प्राप्त करने है। अब शिक्षकों को यह देखना है कि शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चे को भी इतने अंक अर्जित करने के लिए कैसे तैयार करना है। उसके लिए हरेक विषय में, खास कर विज्ञान, गणित व अंग्रेजी विषयों में उसे किस तरीके से तैयारी करानी है?

पिछले वर्षों की परीक्षाओं में जो प्रश्न आए हैं, उनकी विशेष रूप से तैयारी कराई जाए। संभावित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार की जाए, गैस पेपरों आदि का सहारा लिया जाए। यानी हमें सामूहिक रूप से इस प्रकार की रणनीति तैयार करनी है कि आगामी परीक्षाओं में हमारा हर विद्यार्थी कम से कम पास-प्रतिशत अंक अवश्य प्राप्त करे। जिन विद्यालयों के परीक्षा परिणाम गत वर्ष शून्य से 10 प्रतिशत आए थे, उनकी मीटिंग ली गई थी। इस में न केवल उन्हें इस वर्ष बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया गया, बल्कि उनकी समस्याओं को भी गंभीरता से सुना गया।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के अध्यक्ष व सचिव के साथ भी इस संबंध में मीटिंग करके यह कोशिश की गई कि बच्चों के मन में से परीक्षाओं के तनाव को किस प्रकार से कम किया जा सके। इसके लिए हमने बोर्ड की बेवसाइट पर पिछले तीन साल के प्रश्न-पत्र लगाये हैं ताकि परीक्षार्थियों को ये पता चल सके कि आगामी परीक्षा में किस पैटर्न का प्रश्न-पत्र आने वाला है। जो विद्यार्थी पहली बार बोर्ड की परीक्षा दे रहे हैं उन्हें पहले से ही यह पता होना चाहिए कि पेपर में कितने सवाल होते हैं। कितने सवालों के जवाब संक्षिप्त लिखने हैं और कितनों के विस्तार में। एक अंक के लघु उत्तर वाले प्रश्न कितने होंगे? जब इन बातों की जानकारी पहले से ही विद्यार्थी के पास होगी तो वह परीक्षा की तैयारी बेहतर ढंग से कर सकता है। गत तीन वर्षों के प्रश्न-पत्र की तैयारी अगर वह कर लेता है तो उसकी काफी अच्छी दोहराई हो जाती है।

मुझे पूरा यकीन है कि हम सभी के सामूहिक प्रयासों से इस वर्ष हमारे परीक्षा परिणाम बहुत अच्छे होंगे। आगामी परीक्षाओं के लिए सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

पीके दास
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा

बच्चों ने गौर से सुनी 'परीक्षा पे चर्चा'

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 29 जनवरी 2019 को देश भर के दो हज़ार से अधिक छात्रों से रूबरू हुए। दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में पीएम मोदी ने परीक्षार्थियों को तनाव से उबरने का मंत्र दिया। हरियाणा प्रदेश के सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भी प्रधानमंत्री महोदय की प्रेरक बातचीत को सुना।

प्रधानमंत्री ने कहा- परीक्षा का महत्त्व है, लेकिन अगर हम ये सोचें कि यह ज़िंदगी की परीक्षा नहीं है तो हमारा भार कम हो जाएगा। इस परीक्षा के बाहर भी ज़िंदगी है। परीक्षा को एक अवसर मानें और इसका आनंद उठाएँ। प्रधानमंत्री ने अभिभावकों को भी सलाह दी और कहा कि बच्चों पर अपने सपने न थोपें, क्योंकि दबाव में बच्चे बिखर जाते हैं। अगर बच्चा असफल भी होता है तो माँ-बाप उनका हौसला बढ़ाएँ। सोशल स्टेटस की वजह से दबाव न पालें।

उन्होंने अभिभावकों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने छात्रों को परीक्षा की तैयारी और जीवन के लक्ष्य से जुड़ीं कई काम की चीजें बताईं। उन चीजों का इस्तेमाल करके आप अपनी तैयारी और भविष्य के लक्ष्य को मजबूत कर सकते हैं।

तकनीक समस्या नहीं, हल है:

आज के समय में ज्यादातर छात्र मोबाइल और इंटरनेट पर अपना समय बिताते हैं। मोबाइल और इंटरनेट का अगर सही इस्तेमाल करें तो यह आपके लिए बुरी चीज नहीं है बल्कि इससे और मदद ही मिलेगी। लेकिन कई छात्र सिर्फ गेम खेलने में सारा समय गुजार देते हैं। आप छात्र के तौर पर मोबाइल और इंटरनेट की मदद अपनी तैयारी में ले सकते हैं। अभी कई वेबसाइट और ऐप्स हैं जहाँ बहुत अच्छा स्टडी मटीरियल मौजूद है।

यह स्टडी मटीरियल वीडियो में भी है। इसकी खासियत है कि बड़ी आसान और समझ में आने वाली भाषा में इसे समझाया गया है। जिस टॉपिक में आप कमजोर हैं, उसको आप इससे मजबूत कर सकते हैं।

मॉक टेस्टः

आपको ढेरों सारे ऑनलाइन मॉक टेस्ट मिल जाएँगे। मॉक टेस्ट की मदद से आप अपनी तैयारी का स्तर और कमियों को पता कर सकते हैं। फिर जिस चीज में आप कमजोर हैं, उसको मजबूत करने के लिए काम कर सकते हैं।

शब्द भंडार बढ़ाएँः

किसी शब्द का अर्थ डिक्शनरी में खोजने में समय लगता है। कई बार आलस से हम डिक्शनरी में शब्दों का अर्थ नहीं खोजते हैं। आप यहाँ भी तकनीक की मदद ले सकते हैं। सेकंडों के अंदर आप किसी शब्द का अर्थ इंटरनेट पर खोज सकते हैं। धीरे-धीरे इस तरह से आपके पास बड़ी मात्रा में शब्द भंडार हो जाएगा जिससे आपको लिखने और बोलने में मदद मिलेगी।

भाषा पर पकड़ बनाएँः

आज के समय में कई भाषाओं के ऐप आ गए हैं। आप उन ऐप की मदद से हिंदी, इंग्लिश या अन्य भाषाओं पर अपनी पकड़ मजबूत बना सकते हैं।

लक्ष्य है जरूरीः

जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य का होना जरूरी है। पहले एक लक्ष्य तय कर लें और फिर उसको हासिल करने के लिए रणनीति बनाएँ। हमेशा भाग्य के भरोसे पर नहीं। दुनिया के कामयाब लोगों का इतिहास उठाकर देखें। कोई भी भाग्य के भरोसे नहीं रहा। साथ ही लक्ष्य का संभव होना भी जरूरी है। अपनी क्षमता, योग्यता और परिस्थिति को देखकर ऐसे लक्ष्य बनाएँ जिसे अगर आसानी से नहीं तो थोड़ी से मेहनत से हासिल किया जा सके।

'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में पीएम मोदी की कुछ बड़ी बातें

1. कसौटी बुरी नहीं होती, हम उसके साथ किस प्रकार के साथ निपटते हैं, उस पर निर्भर करता है। मेरा तो सिद्धांत है कि कसौटी कसती है, कसौटी कोसने के लिए नहीं होती है।
2. अभिभावकों को अपने बच्चों को टेक्नॉलॉजी के सही इस्तेमाल के बारे में जानकारी देनी चाहिए। तभी बच्चे प्ले स्टेशन छोड़कर प्ले ग्राउंड की ओर जाएँगे।
3. जिंदगी का मतलब ठहराव नहीं है, जिंदगी का मतलब ही होता है गति।
4. लोग कहते हैं मोदी ने बहुत आकांक्षाएँ जगा दी हैं, मैं चाहता हूँ कि सवा सौ करोड़ देशवासियों की सवा सौ करोड़ आकांक्षाएँ होनी चाहिए।
5. हमें आकांक्षाओं को उजागर करना चाहिए, देश तभी चलता है. अपेक्षाओं के बोझ में दबना नहीं चाहिए। हमें अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपने आपको सिद्ध करना चाहिए।
6. निराशा में डूबा समाज, परिवार या व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकता है, आशा और अपेक्षा ऊर्ध्व गति के लिए अनिवार्य होती है।
7. लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो पहुँच में तो हो, पर पकड़ में न हो। जब हमारा लक्ष्य पकड़ में आएगा तो उसी से हमें नए लक्ष्य की प्रेरणा मिलेगी।
8. कसौटी बुरी नहीं होती, हम उसके साथ किस प्रकार के साथ निपटते हैं, उस पर निर्भर करता है। मेरा तो सिद्धांत है कि कसौटी कसती है, कसौटी कोसने के लिए नहीं होती है।
9. बच्चों पर कभी उम्मीदों को नहीं थोपा जाना चाहिए, अभिभावकों को समझना चाहिए अपने बच्चों के अंदर की संभावनाओं को पहचानना चाहिए।

हरियाणा के विद्यालयों में प्रधानमंत्री जी की चर्चा को सुनाने के लिए विशेष प्रबंध किए गए। जिस विद्यालय के पास जो भी संसाधन उपलब्ध थे, उसी के अनुसार विद्यार्थियों को प्रधानमंत्री द्वारा की गयी बात से विद्यार्थियों को रूबरू कराया।

फरीदाबाद जिले के राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा में प्राचार्या नीलम कौशिक ने बताया कि उनके विद्यालय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की परीक्षाओं पर चर्चा का लाइव प्रसारण बच्चों को सुनवाया गया। सभी बच्चों को विशेष रूप से असेम्बली में इकट्ठा किया गया और मोबाइल पर लाइव प्रसारण माइक की सहायता से स्कूल के सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों और प्राचार्या ने ध्यान से सुना। बच्चों ने लाइव प्रसारण में उपस्थित विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी से पूछे गए सवालों को और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के जवाबों को भी ध्यान से सुना और सराहा। रविन्दर कुमार मनचन्दा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने विद्यार्थियों को बहुत प्रभावित किया।

पंचकूला जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रत्तेवाली में भी प्रधानमंत्री द्वारा की गई चर्चा को ऐज़ुसेट पर दिखाया गया व कुछ विद्यार्थियों को यह चर्चा मोबाइल पर एफएम के द्वारा सुनवाई गई। इस बारे में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती साधना ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बच्चों में उत्साह भरने की बात कही कि हमारे अंदर दूसरों को देखकर उन जैसा बनने की चाह होती है जो गलत है। हमें खुद को इतना काबिल बनाना चाहिए कि दूसरे हमारी नकल करें। हर कोई पढ़ाई में अच्छा नहीं होता और न ही कोई खेलकूद और गाने बजाने में अच्छा होता है। प्रधानमंत्री ने तुलना नहीं करने की जो सलाह दी, वह बहुत अच्छी लगी।

विद्यालय में कार्यरत गणित की अध्यापिका सविता ने बताया कि प्रधानमंत्री की यह बात उनके दिल को छू गयी कि गणित व विज्ञान के विषय जीवन उपरांत काम आने वाले विषय हैं, इसलिये इन्हें सीखने की स्वाभाविक जरूरत है।

रसायन विज्ञान की अध्यापिका ज्योति का कहना है कि प्रधानमंत्री ने अभिभावकों को समझाया कि वे बच्चों की आयु में रहकर सोचें व उनसे वैसा ही व्यवहार करें जब वे उनकी आयु में स्वयं चाहते थे। प्रधानमंत्री द्वारा कही बात ने कही न कही उनके मन को भी नई दिशा प्रदान की है।

इस बारे में छात्रा निकिता का कहना है कि प्रधानमंत्री ने जो समझाया कि माता-पिता द्वारा पढ़ने के लिये जो बार-बार कहा जाता है उससे रुष्ट न होकर सकारात्मक रवैया अपनाना है, जिससे कि परीक्षा बोझ न बन पाए।

- डॉ प्रदीप राठौर

इनपुट- सुमन शर्मा

पूरे शिक्षण तंत्र को सक्षम बनाने की कवायद

प्रमोद कुमार

विभाग में कुछ ऐसे कार्य हैं जो तय समय सीमा में किए जाने अति आवश्यक हैं। कुछ लाभ, छात्रवृत्तियाँ और निःशुल्क हकदारियाँ जो छात्रों से सम्बन्धित हैं यदि समय पर उपलब्ध न हों तो विद्यार्थियों के हक नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। कुछ मामले अध्यापकों के एसीपी, पदोन्नति, मैडिकल तथा अन्य हकदारियों से जुड़े हैं। अगर समय पर न हों तो व्यवस्था पूरी तरह नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। तीसरी मुख्य कड़ी है स्कूल जो शिक्षा के केन्द्र हैं, उनमें अगर सभी सुविधाएँ अनुरूप न हों तो स्कूल शिक्षा के केन्द्र नहीं कहे जा सकते अब इन तीनों (विद्यार्थी, अध्यापक और स्कूल भवन) के मामले यदि निदेशालय में अटके रहें, लम्बे समय तक लटके रहें तो किसकी जिम्मेदारी है और इसके लिए दोषी कौन है। कई बार तो महज छोटी-सी लापरवाही बड़े कोर्ट केस का कारण बनती है। यदि सही समय पर समय सारणी का अनुपालन किया जाए तो अवस्था और व्यवस्था दोनों ही बदल सकती है।

विभाग की कार्यप्रणाली का लम्बा अनुभव रखने वाले तथा नब्ज को अच्छे से समझने वाले अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, विद्यालय शिक्षा विभाग, श्री पीके दास जी द्वारा दिनांक 11 जनवरी, 2019 को **DGSE**, **DEE** तथा **SPD** के सभी अधिकारियों से एक-एक पहलू पर चर्चा की गई तथा कुछ बहुत ही शानदार निर्णय लिए गए जो विद्यार्थी, अध्यापक और स्कूल के लिए बहुत ही कल्याणकारी हैं। वित्त विभाग द्वारा स्वीकृत बजट और योजना यदि क्रियान्वयन तक न पहुँचे तो उसका कोई लाभ नहीं है। यह घोर लापरवाही ही नहीं अपितु राष्ट्र की उन्नति में भी घातक है। इसके लिए निम्नानुसार निर्णय/प्रस्ताव/योजना/तथा कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया है-

1.बजट खर्च- बजट के खर्च को लेकर विभिन्न क्वार्टर में लगने वाली वित्त विभाग की खर्च सीमा (कैप) के समाधान के लिए वर्ष के आरम्भ में ही पूरे खर्च का प्रस्ताव तैयार किया जाए। उसके मासिक अथवा त्रिमासिक खर्च आकलन के अनुसार वित्त विभाग को एक साँझी मिसल प्रस्तुत की जाए ताकि समय-समय पर इसमें लगने वाली बाधा का स्थायी समाधान हो सके।

2. दाखिला फार्म- बच्चों के दाखिले के फार्म का पुनरवलोकन किया जाए। उसके माध्यम से ही लाभार्थी की सूची तैयार की जानी है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के दसवीं के परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही उसे एमआईएस के साथ जोड़कर सूची बनाई जाए तथा उसे सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को दिया जाए जिससे छात्रवृत्ति सम्बन्धित लाभ बच्चों को तुरन्त प्राप्त हो सकें। इसके अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की छात्रवृत्तियाँ तथा निःशुल्क हकदारियों के लिए पीएफएमएस का डाटा वर्ष के पहले मास में ही संतुलित किया जाए। स्कूल से सीआरसी, बीआरसी के माध्यम से बार-बार डाटा माँगना बन्द किया जाए तथा डाटा माँगने के स्थान पर एमआईएस से डाटा लिया जाए।

3. भवन निर्माण और मुरम्मत के लिए विद्यालयों से प्रस्ताव- इसके लिए स्कूलों की संख्या के अनुसार कुल वार्षिक बजट को जिलों में बाँटकर जिला शिक्षा अधिकारी/जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से फरवरी मास में ही प्रस्ताव प्रात कर लिए जाएँ। खर्च तथा एस्टीमेट आदि जेई के माध्यम से मँगवाई जाए तथा अप्रैल के पहले सप्ताह में हर हालत में राशि जारी कर दी जाए और इसके

खर्च की समय सीमा भी तय कर दी जाए और उसका पर्यवेक्षण मासिक आधार पर किया जाए।

4.**सोलर पैनल-** जिन विद्यालयों में सोलर पैनल लगाए जाने हैं उनके प्रस्ताव पर कार्यवाही की जाए। इसका प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत किया जाए ताकि अगले वर्ष के लिए समुचित वित्त प्रावधान करवाए जा सकें। स्कूलों में बिजली की समस्या का स्थाई समाधान किया जाए।

5.**मॉडल स्कूल-** मॉडल स्कूल के सन्दर्भ में जो भवन आदि की आवश्यकता है उसका अध्ययन तथा रिपोर्ट स्कूल में जाकर तैयार की जाए जिसमें भवन की उपलब्धता, वर्तमान छात्र संख्या आदि को मध्य नजर रखा जाए। प्रत्येक खण्ड में कम से कम एक आदर्श विद्यालय हो जिसमें अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल तथा यातायात का भी प्रबन्ध किया जाए, उसका प्रस्ताव बनाया जाए।

6.**बीमा योजना-** विद्यार्थियों के लिए चलाई जा रही बीमा योजना को उन तक पहुँचाने के लिए इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि विभिन्न परिस्थितियों में पात्र विद्यार्थी इसका लाभ ले सकें। इसके लिए एक पत्र तैयार किया जाए तथा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध करवाया जाए। क्लेम और दावे के लिए व्यवस्था को सरल बनाया जाए।

7. **सहायता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालय-** सहायता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का विभाग में समायोजन करते समय इन संस्थाओं को अगले 33 वर्षों तक इसी प्रकार से विद्यालय चलाए जाने की शर्त को मानने का वचन दिया था। उसकी अनुपालना को सुनिश्चित किया जाए। टेकओवर के समय स्कूल में दाखिल विद्यार्थियों की फीस में कोई बढ़ोतरी न की जाए। स्कूल को 33 वर्ष तक बन्द न किया जाए अथवा उसी भवन में नया विद्यालय नये नाम से न चलाया जाए। इन सभी शर्तों की अनुपालना का पर्यवेक्षण सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी/जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से करवाया जाए। नये विद्यालय की एनओसी के समय सम्बन्धित शाखा इसका पूरा ख्याल रखे। वार्षिक रिपोर्ट तैयार कर वेबसाइट पर उपलब्ध करवाई जाए।

8.**अध्यापक प्रशिक्षण-** अध्यापक प्रशिक्षण का पूरा कार्य केवल डाइट द्वारा किया जाएगा। कोई भी संस्था/एनजीओ/सीएसआर अध्यापक प्रशिक्षण एससीईआरटी के समन्वय से कैलेंडर बनाकर करेगा। एचएसएसपीपी के सभी अध्यापक प्रशिक्षण भी डाइट के माध्यम से होंगे। इसके लिए हॉस्टल आदि की मुरम्मत करवाई जाए और रिहायशी प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था की जाए। एससीईआरटी में भी मरम्मत आदि करवाई जाए। सभी प्रकार के प्रशिक्षण अब समग्र के माध्यम से ही होंगे। दिसम्बर से मार्च में कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं होगा। अध्यापकों के लिए प्रशिक्षणों की आवश्यकता का आकलन करवाया जाना है। इसकी मिसिल बनाकर सरकार को अनुमति हेतु प्रस्तुत की जाए।

9 **साइंस फेयर तथा मॉडल-** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ मिलकर विज्ञान के वर्किंग मॉडलों का प्रशिक्षण अध्यापकों को करवाया जाए। यह प्रशिक्षण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विशेषज्ञों के माध्यम से विभाग के अध्यापकों को दिलवाया जाना है। इसमें वर्तमान में जो मॉडल बन रहे हैं उनसे अलग **STEM** के मॉडल बनाए जाएँगे जो वर्किंग मॉडल होंगे ताकि विभिन्न विज्ञान प्रदर्शनियों में विद्यार्थी अलग रुचि से भाग ले सकें।

10.**पुस्तकालय प्रबन्धन-** एससीईआरटी, एचएसएसपीपी तथा शैक्षणिक शाखा द्वारा पुस्तकालय के बेहतर उपयोग, रुचिकर उपयोग और उसकी टिकाऊ व्यवस्था बनाने के लिए दिशा-निर्देश बनाए जाएँ। नई पुस्तकों की खरीद विभिन्न कलस्टर में विभिन्न होगी। एक जैसी पुस्तकें सभी स्कूलों में नहीं खरीदी जाएँगी। कुल चयनित/वांछित पुस्तकों को कलस्टर अनुसार बाँट दिया जाएगा तथा तदनुसार खरीद होगी। प्रति वर्ष ये पुस्तकें परस्पर बदली जाएँगी ताकि बच्चों के लिए पुस्तकालय में नई पुस्तकें हर वर्ष प्राप्त हो सके। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए वर्ष में 20 पुस्तकें पढ़ना अनिवार्य होगा तथा कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थी अपने आप पुस्तकालय का प्रबन्धन करेंगे। हाउस व्यवस्था में इसको भी शामिल किया जाए। उपयोग के कारण क्षतिग्रस्त पुस्तकों को पुस्तकालय के रजिस्टर हटाने के लिए स्कूल मुखिया सक्षम हैं जिन्हें इस बारे निर्देशित कर दिया जाए।

11.**विज्ञान विषय तथा प्रयोगशाला-** प्रत्येक सप्ताह में कम से कम एक दिन साइंस की कक्षा का आयोजन कक्षा कक्ष की अपेक्षा विज्ञान प्रयोगशाला में होगा। चार-चार विद्यार्थियों का समूह बनाकर प्रयोगशाला में विभिन्न पाठ्यक्रम आधारित प्रयोग करवाना, उनके आधार पर विद्यार्थियों का सीसीई, प्रयोगशाला/प्रयोग आदि के नम्बर का रजिस्टर बनाना और उसमें तिथिवार रिकार्ड रखना, सम्बन्धित विषय अध्यापक का दायित्व होगा। इसके लिए दिशा-निर्देश जारी किए जाएँ।

12.**खेल एवं शारीरिक विकास-** विभाग इसके लिए अपना पूरा कार्यक्रम बनाकर सभी विद्यालयों को जारी करें। खेल के मैदानों को तैयार करने के लिए ग्रांट दी जाए। स्कूलवार खेलों को बढ़ावा दिया जाए, स्किपिंग रोप, फुटबॉल, वालीबॉल, बास्केट बॉल, खो-खो जैसे खलों के लिए सामान उपलब्ध करवाया जाए। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के खेलों की भी व्यवस्था हो। प्रत्येक विद्यालय में दैनिक ड्रिल तथा योगा कार्यक्रम हो। इसके लिए

अध्यापक प्रशिक्षण अवश्य करवाया जाए। विभाग में खेल अधिकारियों की संख्या को बढ़ाया जाए। विभाग की 'खेल नीति' बनाई जाए। स्पोर्ट्स पॉलिसी ऑफ स्कूल एजुकेशन बनाने के लिए स्वीकृति प्राप्त करने हेतु कार्य आरम्भ कर दिया जाए। उन अध्यापकों को भी प्रशिक्षण हेतु लगाया जाए जिन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है, चाहे ऐसे अध्यापक कोई अन्य विषय भी पढ़ाते हों। विभाग को खेल कैलेण्डर उपलब्ध करवाया जाए। किस खेल के खिलाड़ी, किस प्रतियोगिता में अथवा अभ्यास कैम्प में कब और कहाँ भाग लेने जा रहे हैं, इसका मासिक कैलेण्डर/उपलब्धि सभी के साथ साँझी की जाए। विभाग की वेबसाइट पर खेल उपलब्धियों का विवरण अलग से उपलब्ध करवाया जाए।

13. बैग फ्री इंग्लिश मीडियम स्कूल- बैग फ्री इंग्लिश मीडियम स्कूल का कक्षा दूसरी तथा तीसरी तक ले जाने की योजना का प्रारूप बनाकर प्रस्तुत किया जाए। इनकी शैक्षणिक प्रगति का मूल्यांकन किसी अन्य एजेंसी से करवाया जाए।

14. स्टूडैंट एसैस्मैंट टैस्ट (सैट)- सैट के परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए कार्य किया जाए। ऐसे विद्यालय जहाँ पीटीआर समुचित है तथा मल्टीग्रेड टीचिंग है उसमें लर्निंग आउटकम में क्या अन्तर है, इसका अध्ययन विशेषज्ञों से करवाया जाए तथा ईएसए से विशेषज्ञ लिए जाएं तथा विश्लेषणात्मक रिपोर्ट सम्बन्धित विद्यालयों के साथ साँझी की जाए।

15. सांस्कृतिक कार्यक्रम- सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत हरियाणवी डांस, रागिनी आदि के अतिरिक्त भी प्रतियोगिताएँ हों जिससे नयापन आए। इसमें नये गाने अथवा नई धुन बनाना, भजन आदि की प्रतियोगिता हो। अध्यापकों के लिए अलग से सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाए।

16. स्काउट्स एवं गाइड्स गतिविधियाँ- स्काउट्स एवं गाइड्स का पूरे वर्ष का प्लान बनाकर अप्रैल में ही अप्रूव करवा दिया जाए। उसमें किसी भी प्रकार के बदलाव से पूर्व अनुमति ली जाए। कैलेण्डर सभी स्कूलों को जारी किया जाए। कार्यक्रम की तैयारी समय से पहले कर ली जाए जैसे यात्रा सम्बन्धित कार्य करना, टिकट का प्रबन्ध करना आदि।

17. जिला परिषद का पर्यवेक्षण- जिला परिषद को मिड-डे-मील के पर्यवेक्षण का कार्य दिया जाना है। यह निर्णय सरकार के स्तर पर पहले ही हो चुका है। इसके लिए एमआईएस पर एक अलग से पोर्टल बनाया जाए। उसमें कुछ ग्राफ, चार्ट आदि भी उपलब्ध करवाए जाएँ। पर्यवेक्षण के लिए प्रपत्र आदि बनाकर उपलब्ध करवाया जाए।

18. दाखिला अवस्थांतर और ठहराव-दाखिले अवस्थांतर और ठहराव का विश्लेषण करवाया जाए। विशेषकर मेवात में यह विश्लेषण जेंडर के आधार पर हो तथा इसके सुधार का प्लान भी बनाया जाए। इसके लिए कम्युनिकेशन प्लान बनाया जाए जिसमें विभिन्न विज्ञापनों, प्रचार माध्यमों, सोशल मीडिया आदि पर कैसे कार्य होगा, समाचार पत्र के विज्ञापन कब-कब होंगे, एसएमसी, पंचायत सदस्य, जिला परिषद सदस्य आदि को कैसे प्रशिक्षण देना है। विज्ञापन में तीनों विभागों की उपलब्धियों का वर्णन हो।

19. पर्यवेक्षण- विभिन्न विद्यालयों में कुछ अधिकारी आजकल पर्यवेक्षण हेतु जा रहे हैं। उनके लिए 'डूज़ एंड डोंट्स' बनाए जाएँ ताकि ये स्कूल में बच्चों के सामले अध्यापकों को प्रताड़ित न करें। पर्यवेक्षण और निरीक्षण के अन्तर को पहचाना जाए।

20. प्रतियोगिता-प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा अनुरूप शब्दावली उपलब्ध करवाई जाए। उसके लिए तैयारी करवाकर प्रतियोगिता करवाई जाए जो क्विज़ क्लब की भाँति तथा उसी आधार पर हो। इस प्रतियोगिता में अध्यापक भी शामिल हों। क्विज़ क्लबों से ही अध्यापकों के लिए भी प्रतियोगिता आरम्भ करवाई जाए।

21. सैट तथा सक्षम टैस्ट को समन्वय से करना है तथा एनएएस के लिए तैयारी करनी है। मंथली एसैस्मैंट टैस्ट का प्रारूप एनएएस के अनुसार बनाना है। विभिन्न ग्रांट की समय सीमा में उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए बीईओ, डीईईओ को भी जिम्मेदार बनाया जाए। देरी की स्थिति में उनकी एपीएआर में इसको दर्ज किया जाए। विद्यालय में विद्यार्थी अपने जन्म-दिन पर पुस्तकालय को कोई पुस्तक भेंट दें। इसके लिए पत्र जारी किया जाए तथा व्यापक वातवरण बनाया जाए।

22. Aspirational District Nuh के लिए सभी प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों की छात्र संख्या का अध्ययन किया जाए। नये मिडल स्कूल बनाए जाएँ। लड़के-लड़कियों के सैक्शन अलग बनाए जाएँ, उसी अनुसार उच्च विद्यालय भी ज्यादा से ज्यादा बनाए जाएँ ताकि ड्रॉपआउट को रोका जा सके।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर यदि कार्य होता है तो इससे न केवल गुणवत्ता शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा अपितु विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों राहत का अनुभव करेंगे।

जो देखता हूँ वही बोलने का आदी हूँ,
मैं अपने शहर का सबसे बड़ा फसादी हूँ।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

छात्राओं ने सीखे जीवन कौशल विकास के गुर

714 विद्यालयों में 1 से 10 जनवरी के बीच लगाये गए जीवन कौशल विकास शिविर

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा राजकीय विद्यालयों की छात्राओं के सर्वांगीण विकास को लेकर राज्य के सभी जिलों के कुल 238 प्राथमिक विद्यालयों व 476 वरिष्ठ विद्यालयों में पाँच दिवसीय जीवन कौशल विकास शीतकालीन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर 1 जनवरी से लेकर 10 जनवरी तक लगाये गये। इन शिविरों को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को विभिन्न सार्वजनिक कार्यालयों के संचालन और उनके कामकाज के विषय में जागरूक करना है। ये शिविर प्रतिदिन प्रातः दस बजे से लेकर एक बजे तक लगाए गए।

इनमें प्रतिदिन नागरिक हस्पताल के डॉक्टरों द्वारा स्वास्थ्य जानकारी दी गई व कृषि एवं बैंक से संबंधित संसाधन व्यक्तियों द्वारा डाकघर एवं बैंकों में पैसे से लेनदेन संबंधित जानकारी दी गई। इन पाँच दिवसीय शिविरों में 50 छात्राएँ मिडल और 50 छात्राएँ सीनियर सेकेंडरी वर्ग की चयनित की गईं और इनमें बालिकाओं के स्वास्थ्य, आर्गेनिक फार्मिंग, हॉर्टिकल्चर, आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, कम्युनिकेटिव स्किल्स के बारे में बताया गया। शिविरों में प्रत्येक विद्यालय में कुल 50 छात्राओं जिसमें मुख्यतः उन छात्राओं का चयन किया गया जो अनुसूचित जाति या वंचित समूह की थीं ताकि इन बालिकाओं को भी अपनी रचनात्मकता एवं ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हो व उनमें आत्मविश्वास व सहयोग की भावना विकसित हो। इन शिविरों में खेल गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं के लिए अधिगम संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

फरीदाबाद के सराय ख्वाजा विद्यालय में ऐसे ही एक शिविर के समापन के अवसर पर बोलते हुए वहाँ की उप जिला शिक्षा अधिकारी शशि अहलावत ने कहा कि ऐसे शिविर निश्चित तौर पर बालिकाओं को सशक्त बनाने की दिशा में उठाए गए प्रयास हैं। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री की पहल पर बच्चों और युवाओं का कौशल विकास देश में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

पंचकूला जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुंगा की छात्राओं ने बताया कि शिविर में उन्हें अनेक ऐसे जीवन-कौशलों की जानकारी मिली जो उनके जीवन के लिए बहुत उपयोगी रहेंगी। उन्हें रैडक्रॉस के अधिकारियों द्वारा प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी मिली, डॉ. यामिका राठौर ने उन्हें दाँतों की बीमारियों और उनसे बचाव की विशद जानकारी दी।

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा समग्र शिक्षा के तहत आयोजित होने वाले इन शिविरों के आयोजन हेतु राज्य के प्रत्येक खंड से दो प्राथमिक स्कूलों का चयन किया गया जिसके तहत 119 खंडों के 238 प्राथमिक स्कूलों के लिए 47,60,000 व सेकेंडरी स्तर पर प्रत्येक खंड से 4 स्कूलों का चयन किया गया जिसके तहत 119 खंडों के 476 स्कूलों के लिए जिला स्तर पर 20,000 प्रति कैंप की दर से 95,20,000 की राशि जारी की गई।

-शिक्षा सारथी डेस्क

उच्च अधिकारी दिखाएँगे उच्च मुकाम तक पहुँचने का रास्ता

राज्य के 440 राजकीय स्कूलों के बच्चों को अपने जिले के उच्च अधिकारियों से बातचीत करने व भविष्य में अपने करियर को चुनने व उससे संबंधित काउंसिलिंग प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् के तहत सभी जिलों के उच्च अधिकारी स्कूलों में जाकर बच्चों से संवाद कर उनके साथ अपने अनुभव सांझा करेंगे और उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करेंगे ताकि बच्चे जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। इसके लिए विभिन्न विभागों के अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। अधिकारी स्कूलों में जाकर बच्चों के साथ अपने अनुभवों को सांझा करने के साथ-साथ उनकी करियर काउंसिलिंग भी करेंगे।

उपरोक्त कार्यक्रम के लिए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा निर्देश दिए गए हैं कि जिला परियोजना संयोजक अपने जिले के 20 राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय व राजकीय उच्च विद्यालयों का चयन करेंगे जिसमें कक्षा 8 व उससे ऊपर की कक्षाओं में बच्चे पढ़ रहे हैं। प्रत्येक स्कूल को 2000/- रुपये की राशि इस कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु प्रदान की गई है। राज्य के सभी अतिरिक्त उपायुक्तों को इस कार्यक्रम का नोडल ऑफिसर नियुक्त किया गया है जो अपने जिले के सभी उच्च अधिकारियों को स्कूलों में जाकर बच्चों से संवाद स्थापित करने की व्यवस्था व योजना बनाएँगे। प्रत्येक अधिकारी को एक निर्धारित स्कूल दिया जाएगा।

इस कार्यक्रम के तहत स्कूली बच्चे, स्कूल को मॉर्निंग असेम्बली के समय अपने जिले के उपायुक्त, अतिरिक्त उपायुक्त, एसएसपी, एसपी, संयुक्त आयुक्त, डीएसपी, जीएम रोडवेज, जिला राजस्व अधिकारी, तहसीलदार, डिस्ट्रिक्ट अटार्नी, एसडीओ, डीडीपीओ, फॉरेस्ट अधिकारी व अन्य अधिकारियों से मिलने व बातचीत करने के अवसर प्राप्त होंगे।

गौरतलब है कि कक्षा 8 व इसके ऊपर की कक्षाओं में पढ़ रहे बच्चों में न केवल उत्साह बल्कि अपने लक्ष्य को लेकर भी असीमित सवाल भी होते हैं, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सरकारी स्कूल के बच्चों की करियर काउंसिलिंग करना व उन्हें भविष्य में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सक्षम बनाना भी है।

-आस्था कौशिक

झज्जर के 'सक्षम' बनने की गौरव-गाथा

सुदर्शन पुनिया

सक्षम हरियाणा, मुख्यमंत्री कार्यालय से संचालित एक परियोजना है जिसका उद्देश्य हरियाणा के सरकारी स्कूलों में 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को ग्रेड स्तर तक सक्षम बनाने का लक्ष्य रखा गया है। सक्षम एक ऐसी पहल है जो दक्षता आधारित पठनपाठन पर जोर देती है। इसके अंतर्गत छात्रों का आकलन अंकों की अपेक्षा दक्षताओं के आधार पर किया जाता है। यह माना जाता है कि जब कोई छात्र 80 प्रतिशत दक्षताओं को प्राप्त करता है, तो वह सक्षम छात्र होता है। उसी तरह यदि कक्षा के 80 प्रतिशत छात्र अपनी कक्षा की दक्षताएँ प्राप्त करते हैं, तो कक्षा सक्षम कक्षा होगी और इसी तरह सक्षम स्कूल, सक्षम जिला और सक्षम राज्य बनेगा।

11 दिसम्बर, 2018 को छठे राउंड का परिणाम घोषित किया गया जिसमें जिला झज्जर का पाँचवाँ और अंतिम खंड झज्जर भी सक्षम घोषित होते ही पूरा झज्जर जिला सक्षम जिला बन गया।

जिला झज्जर की सक्षम यात्रा और इसके लिए उठाए गए कदम-

1. सक्षम कार्यक्रम का शुभारम्भ : 20 अक्टूबर, 2017 को जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, माछरौली में मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी सुश्री निशिता बनर्जी ने

सभी शिक्षा अधिकारियों की एक सभा में सक्षम कार्यक्रम के बारे में बताया तथा जिला शिक्षा अधिकारी श्री सतबीर सिंह सिवाच ने इसी संस्थान के प्राध्यापक श्री सुदर्शन पुनिया को इस कार्यक्रम के लिए जिला सक्षम नोडल अधिकारी की ज़िम्मेदारी सौंपी।

2. सक्षम घोषणा : जिला शिक्षा अधिकारी श्री सतबीर सिंह तथा उस समय के जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी श्री वेदपाल दौलता और नोडल अधिकारी श्री सुदर्शन पुनिया ने सभी खण्डों के मंथली असेसमेंट टेस्ट का विश्लेषण किया तथा सबसे पहले मातनहेल और बेरी का नामांकन थर्ड पार्टी असेसमेंट के लिए किया गया।

3. प्रशिक्षण एवं अभ्यास सामग्री का निर्माण : 24 से 27 अक्टूबर 2017 तक जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, माछरौली में सभी खंडों से पाँच-पाँच प्राथमिक और उच्च प्राथमिक अध्यापकों की कार्यशाला खंड शिक्षा अधिकारी मातनहेल श्री राजेश कुमार और खंड मौलिक शिक्षा अधिकारी बेरी श्री वीरेंद्र नारा की अध्यक्षता में एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें श्री सुदर्शन पुनिया ने सभी अध्यापकों को सक्षम कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी तथा अभ्यास सामग्री का निर्माण कराया गया।

4. क्लस्टर स्तर पर मेंटर की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण : जिला में कार्यरत एबीआरसी/ बीआरपी, डाइट फ़ैकल्टिस को क्लस्टर स्तर पर मेंटर नियुक्त किया गया तथा उनको नोडल अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया कि एक सफल मेंटेरिंग कैसे की जाए तथा कक्षावार दक्षताओं पर चर्चा की गई। सभी मेंटर अपने अपने क्लस्टर के विद्यालयों में सप्ताह में कम से कम दो दिन अवश्य जाते थे तथा अध्यापकों को शैक्षणिक सहायता प्रदान करते थे।

5. खंड एवं क्लस्टर स्तर पर मीटिंग : सक्षम कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी देने के लिए कक्षा तीसरी, पाँचवीं तथा सातवीं को पढाने वाले अध्यापकों तथा स्कूल मुखियाओं की मीटिंग प्रत्येक क्लस्टर स्तर पर मेंटर द्वारा तथा खंड स्तर पर जिला एवं खंड के शिक्षा अधिकारियों तथा नोडल अधिकारी द्वारा आयोजित की गई जिसमे सक्षम क्या है, इसे कैसे लागू किया जाएँ, विद्यार्थियों को सक्षम कैसे बनाया जाए, मूल्यांकन कैसे होगा, खंड सक्षम कैसे बनेगा आदि बिन्दुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई

6. स्टार अध्यापकों का चयन : प्रत्येक क्लस्टर से दो-दो स्टार अध्यापकों का चयन किया गया तथा उन्हें विशेष रूप से सक्षम का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। ये स्वयं प्रेरित अध्यापक अपने क्लस्टर के विद्यालयों में जाकर अन्य साथी अध्यापकों का सहयोग करते और सक्षम की जानकारी प्रदान करते थे।

7. रिव्यू मीटिंग : जिले की ऊर्जावान और नवाचारी उपयुक्त महोदया श्रीमती सोनल गोयल की अध्यक्षता

में प्रतिमाह डीसी रिव्यू का आयोजन किया जाता है जिसमें सक्षम कार्यक्रम से सम्बंधित पीपीटी के माध्यम से प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से चर्चा की जाती है। बॉटम परफोर्मिंग स्कूल पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी प्रकार से एसडीएम रिव्यू मीटिंग का आयोजन संबनधित एसडीएम द्वारा अपने उपमंडल के लिए किया जाता है।

8. जिला प्रशासन का योगदान : झज्जर को सक्षम बनाने में उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल के नेतृत्व में जिला प्रशासन का विशेष योगदान रहा है। उपयुक्त महोदया और उपमंडल अधिकारी (नागरिक) श्री जगनिवास, श्री विजय मालिक, श्री रोहित यादव, श्री अश्वनी कुमार तथा मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी सुश्री तान्या शर्मा आदि ने स्वयं विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों के ग्रेड स्तर का मूल्यांकन किया और अध्यापकों और विद्यार्थियों और समर्पित भाव से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रत्येक अधिकारी ने कुछ विद्यालयों को गोद भी लिया हुआ है जिससे शिक्षक समुदाय और विद्यार्थियों में बहुत ज्यादा जागरूकता आई।

9. सक्षम मेंटरिंग : जिला में विद्यालयों में मेंटरिंग के लिए एक सक्षम टीम का गठन किया गया है जिसमें एबीआरसी/ बीआरपी, डाइट फैकल्टीज़ एवं कुछ नवाचारी प्राचार्य को शामिल किया गया है। ये सभी विद्यालयों में जाकर अध्यापकों को अकैडमिक सपोर्ट प्रदान करते हुए विद्यार्थियों को भी प्रेरित करने का काम करते हैं।

10. प्री असेसमेंट : ग्रे मैटर इंडिया के द्वारा थर्ड पार्टी असेसमेंट से पहले प्रत्येक खंड का प्री असेसमेंट टेस्ट लिया गया तथा परिणाम का विस्तार से विश्लेषण किया। कमजोर प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों पर विशेष ध्यान दिया गया। किस विद्यालय में किस कक्षा की कौन सी कंपीटेन्सी कमजोर है, इस विषय पर विशेष ध्यान देकर उन कमजोरियों को दूर करने का प्रयास किया गया।

11. सक्षम हरियाणा द्वारा सुझाए गये इनीशिएटिव को लागू करना : जिला झज्जर में सक्षम के सभी इनीशिएटिव जैसे सक्षम रजिस्टर, सक्षम पीटीएम, सक्षम अभ्यास, सक्षम अध्यापक डैशबोर्ड, सक्षम सफलता, सक्षम छत्रछाया आदि सभी को प्रभावशाली तरीके से लागू किया गया है। सक्षम अध्यापक डैशबोर्ड की ट्रेनिंग सबसे जिला झज्जर ने पूर्ण की थी। के आयोजन में डाटा एकत्रित करने के लिए गूगल फॉर्म का प्रयोग किया जाता है ताकि उसका अच्छी तरह से विश्लेषण किया जा सके।

12.सूचना एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग : जिला झज्जर को सक्षम बनाने में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का समुचित उपयोग किया गया। जिला, खंड, क्लस्टर एवं विद्यालय स्तर पर अध्यापकों और अधिकारियों के व्हाट्सएप्प ग्रुप्स बनाये गये जिनके माध्यम से सूचना, अभ्यास सामग्री और बैस्ट प्रैक्टिस का आदान प्रदान किया जाता है। मेंटर को भी विद्यालय की यात्रा के उपरांत विद्यालय की पूरी रिपोर्ट एक गूगल फॉर्म के लिंक पर देनी होती थी तथा प्रतिदिन की रिपोर्ट श्री सुदर्शन पुनिया द्वारा सक्षम झज्जर के ग्रुप में प्रस्तुत कर दी जाती थी जिसमे सभी प्रशासनिक और शिक्षा अधिकारी शामिल हैं। प्रतिदिन की रिपोर्ट का

विश्लेषण किया जाता है तथा उस आधार पर अधिकारीगण भी विद्यालय का निरीक्षण करते हैं।

13. प्रेरक गतिविधियाँ : आदरणीया उपायुक्त महोदया के नेतृत्व में सक्षम कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं जैसे सक्षम मैराथन, सक्षम में अच्छा कार्य करने वालों का सम्मान, सक्षम आधारित पेंटिंग, रंगोली, भाषण, कविता पाठ कम्पटीशन आदि। इन सबसे सभी को प्रेरणा मिलती है और एक अच्छे वातावरण का निर्माण होता है जो सबको समर्पित भाव से कार्य करने को प्रेरित करता है।

14. सभी हितधारकों में समन्वय : जिला झज्जर में सक्षम कार्यक्रम में शामिल सभी हितधारकों में तालमेल रहता है। उपायुक्त महोदया, अतिरिक्त उपायुक्त, एसडीएम, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जिला परियोजना समन्वयक, खंड शिक्षा अधिकारी, जिला सक्षम नोडल अधिकारी आदि एक टीम के रूप में काम करते हुए जिले को सक्षम के पथ पर अग्रसर करते हैं।

15. सक्षम सेल हरियाणा का मार्गदर्शन : आदरणीय डॉ राकेश गुप्ता जी के दिशा निर्देशन में सक्षम सेल हरियाणा का प्रेरणादायी नेतृत्व तथा समय समय वीडियो कांफ्रेंस द्वारा सक्षम कार्यक्रम की प्रगति पर विचार विमर्श करना तथा अच्छे प्रयासों की सराहना करते रहना भी सभी को प्रेरणा और ऊर्जा से भरता रहा। सक्षम सेल से दिव्या आहूजा और अनीश ने जिले की यात्रा की और कुछ व्यावहारिक टिप्स भी प्रदान किये।

16. जिला सक्षम नोडल अधिकारी के प्रयास: जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, माछरौली झज्जर में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत श्री सुदर्शन पुनिया को जिला झज्जर के सक्षम के नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी दी गई जिसको उन्होंने बखूबी निभाया। चाहे क्लस्टर स्तर की मीटिंग हो या खंड या जिला स्तर की मीटिंग सभी में उनकी भागेदारी रही। उन्होंने जिले के लगभग सभी विद्यालयों में जाकर कक्षा कक्ष में विद्यार्थियों और अध्यापकों से संवाद किया और उनको प्रेरित किया। गूगल फॉर्म बनाना, रिपोर्ट निकालना, पीपीटी के माध्यम से आँकड़ों का विश्लेषण करके अधिकारियों के सामने रखना, अभ्यास सामग्री का निर्माण कराना, सैट डैशबोर्ड तथा अन्य सभी प्रकार की ट्रेनिंग प्रदान करना इन सब में उनकी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनके प्रयासों के देखते हुए सक्षम सेल ने उन्हें सक्षम ऑफिसर ऑफ़ द वीक भी घोषित किया था।

16 . टीम सक्षम झज्जर : जिला झज्जर की सक्षम टीम जिसने जिले को सक्षम करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया-

1.माननीय उपायुक्त महोदया-श्रीमती सोनल गोयल, 2.माननीय अतिरिक्त उपायुक्त महोदय- श्री सुशील सारवान, 3. उपमंडल अधिकारी (ना.)- श्री राहुल नरवाल (बेरी), श्री जगनिवास (बहादुरगढ़) ,श्री विजय मालिक (झज्जर), 4. जिला शिक्षा अधिकारी- श्री सतवीर सिंह सिवाच, 5. जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी- श्री सुरेन्द्र सिंह, 6. प्राचार्य डाइट -श्री दलजीत सिंह, 7. जिला उप शिक्षा अधिकारी- श्री मदन लाल (डीपीसी)-श्री राजेश कुमार, श्री वीरेंद्र सांगवान, 8. सक्षम नोडल अधिकारी-श्री सुदर्शन पुनिया, 9. खंड शिक्षा अधिकारी- श्री कश्मीर सुहाग (मातनहेल), श्री वीरेंद्र नारा (बेरी), श्री सुनील कोहली (बहादुरगढ़), श्री देवेन्द्र सिवाच (साल्हावास), श्री रणबीर कादयान (झज्जर),10. डाइट स्टाफ - श्री सुनील कुमार (प्राध्यापक),श्री जितेन्द्र मालिक (वरिष्ठ प्राध्यापक), श्री देवेन्द्र गुलिया (प्राध्यापक), श्रीमती निर्मल (प्राध्यापिका) ,श्री राजीव देसवाल (प्राध्यापक),11. जिला उप परियोजना समन्वयक- डॉ सत्यव्रत, श्री प्रेमजीत सांगवान, श्री सुरेन्द्र दहिया 12. सभी एबीआरसी, बीआरपी, स्कूल मुखिया, अध्यापक और विद्यार्थी।

जिला सक्षम नोडल अधिकारी
झज्जर

लीजिए आ गई 'सक्षम क्रांति एक्सप्रेस'

पुष्पा देवी

सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर में गुणवत्तापूर्वक सुधार, नवाचार को बढ़ाने के साथ साथ सरल व प्रभावी शिक्षण बनाने के लिए अध्यापक निरंतर प्रयास कर रहे हैं। इसी कड़ी में खंड जुलाना के राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा ने प्रभावी तरीके से सक्षम क्रांति शैक्षणिक रेल के माध्यम से शिक्षण को नए आयाम देने का प्रभावी प्रयास किया है। जिसके अंतर्गत विद्यालय भवन को सक्षम क्रांति शैक्षणिक रेल का रूप दिया है। टीम भावना से काम करके कितना सुखद अहसास व परिणाम मिलता है ये महसूस किया है कमाचखेड़ा स्टाफ सदस्यों ने। शुरुआत में आई कुछ विषम परिस्थितियों को पार करते हुए कैसे विद्यालय को ऊँचाइयों पर ले जाया जा सकता है। इसका अनूठा उदाहरण हैं राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा की मौलिक मुख्याध्यापिका सविता रानी। उनकी एक छोटी सी पहल व रुचि से शुरू किया गया प्रयास इतना प्रभावी रंग लेकर आएगा ये कल्पना खुद उन्होंने भी नहीं की थी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा के स्टाफ सदस्यों से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सुरेश व बच्चों की मेहनत रंग लाई जिन्होंने पूरे विद्यालय भवन को रेल जैसा रूप देकर उन्होंने विद्यालय सौन्दर्यकरण को चार चाँद लगा दिए हैं। इसमें खंड जुलाना की बीईईओ आदर्श राजन का सकारात्मक साथ, उचित मार्गदर्शन व प्रेरणा सोने पर सुहागा बनी। उन्होंने विद्यालय निरीक्षण के दौरान स्टाफ सदस्यों में कर्त्तव्यनिष्ठा का संचार व कुछ कर गुजरने की ऊर्जा भरने का प्रयास किया जिसके कारण कमाचखेड़ा स्कूल ने ये कीर्तिमान स्थापित किया।

सक्षम क्रांति के इंजन पर सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा का संदेश, प्रथम डिब्बे पर विराम चिह्न, हिंदी शब्दकोश क्रम, संधि, समास, मुहावरा, लोकोक्ति, समास को दर्शाया गया है। दूसरे डिब्बे पर गणित सूत्र, दशमलव ज्ञान, प्राकृत संख्याएँ, ज्यामितिक आकृतियों का क्षेत्रफल व परिमाप, सर्वांगसमता नियम, भिन्नों का ज्ञान, माप सिखाए गए हैं। अंतिम डिब्बे पर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का संदेश देता गार्ड डिब्बा बनाया गया है। इस सक्षम क्रांति में भारतीय संस्कृति को दर्शाया गया है जिसमें मधुबनी आर्ट व वर्ली आर्ट को भी दिखाया गया है जिससे सौंदर्य बोध का आभास होता है। मौलिक मुख्याध्यापिका सविता रानी बताया कि शुरू में जब यहाँ मैंने कार्यभार ग्रहण किया तो स्कूल में सुविधाओं की दरकार थी। लेकिन ग्राम पंचायत कमाचखेड़ा, समाजसेवी संस्थाओं, स्टाफ सदस्यों के सहयोग से हमने निरंतर सुधार के लिए प्रयास किये जिसके सुखद परिणाम हमें मिलते रहे। मन में एक टीस थी कि कुछ नवाचार करें बस इसी दिशा में ये काम किया। ताकि सुदूर ग्रामीण आँचल की प्रतिभाओं को निखार सके।

अध्यापक बीपी राणा ने बताया कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा में बनाई गई सक्षम क्रांति शैक्षणिक रेल स्वयं में एक कीर्तिमान है। इस प्रकार की पहल अध्यापकों के नवाचार व कर्त्तव्यनिष्ठा को मजबूत करती है। शिक्षा विभाग के लिए गौरव की बात है कि अध्यापक शिक्षा व शिक्षार्थियों के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। कम लागत में इतनी सुंदर पाठ्य सामग्री विद्यालय में तैयार की गई है जो सराहनीय काम है। उम्मीद है कि उनकी ये पहल शिक्षा में सकारात्मक क्रांति लाने का काम करेगी। अन्य विद्यालय भी उनसे प्रेरणा लेकर विद्यालय सुधार का बीड़ा उठाएँगे।

शिक्षा विभाग के लिए गौरवशाली पल - उपनिदेशक रोहतास वर्मा

लोकार्पण समारोह में पहुँचे मुख्य अतिथि एससीईआरटी उपनिदेशक रोहतास वर्मा ने कहा कि एक ओर जहाँ सक्षम क्रांति रेल से विद्यालय सौन्दर्यकरण में इजाफा हुआ है वहीं दूसरी ओर बच्चों के शिक्षा स्तर में बढ़ौतरी हुई है। उन्होंने बताया कि इस पहल से हरियाणा के अन्य स्कूलों को प्रेरणा मिलेगी। शिक्षा विभाग के लिए इस प्रकार के आगाज होना गौरवशाली पल हैं।

अध्यापक निरंतर शिक्षण को सरल व रुचिकर बनाने में नित नए प्रयोग कर रहे हैं। विशिष्ट अतिथि पहुँचे डिप्टी डीईओ व डीपीसी वीरेंद्र मलिक ने कहा कि सक्षम क्रांति स्वयं में शिक्षण का भंडार है। उन्होंने बताया कि हर डिब्बे पर हिंदी, अंग्रेजी व गणित विषय से सम्बंधित भरपूर सामग्री है। जिससे बच्चे खेल-खेल में घूमते फिरते विषय ज्ञान को सीखेंगे।

कमाचखेड़ा स्कूल का सक्षम व सराहनीय प्रयास - बीईईओ आदर्श राजन

सक्षम क्रांति रेल का अवलोकन करने के बाद खंड जुलाना की बीईईओ आदर्श राजन ने कहा कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा की मौलिक मुख्याध्यापिका सविता रानी व उनकी टीम ने शिक्षा, शिक्षण सुधार में जो प्रयास किया है वह अनुकरणीय है। सच में सरकारी विद्यालयों की साख को सुदृढ़ करने में इस प्रकार की पहल मील का पत्थर साबित होती है। उन्होंने बताया कि हमारे खंड के लिए दोहरी खुशी की बात ये हुई कि एक ओर राजकीय माध्यमिक विद्यालय कमाचखेड़ा ने इस ऐतिहासिक शुरुआत से सक्षम क्रांति रेल बनाई जो स्वयं में ज्ञान से ओतप्रोत है वहीं दूसरी ओर हमारा खंड जुलाना सक्षम हरियाणा अभियान में शामिल हुआ। उन्होंने बताया कि खंड जुलाना के स्कूल में आकर निस्वार्थ भाव से इसराना स्कूल के कला अध्यापक प्रदीप मलिक ने जो कारगर शुरुआत की है वो सदैव सराहनीय रहेगी।

हमने छोटा सा प्रयास किया जो रंग लेकर आया - मौलिक मुख्याध्यापिका सविता रानी।

विद्यालय की मौलिक मुख्याध्यापिका सविता रानी ने बताया कि विद्यालय में सक्षम क्रांति शैक्षणिक रेल के माध्यम से छात्रों को शिक्षा के आधारभूत ज्ञान देने का प्रयास किया गया है। उन्होंने बताया कि फेसबुक पर कला अध्यापक प्रदीप मलिक की शिक्षा शताब्दी शैक्षणिक रेल को देखकर मन में आइडिया आया। विद्यालय भवन को शिक्षा के प्रति कैसे समर्पित किया जाए उस दिशा में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इसराना जिला पानीपत के कला अध्यापक प्रदीप मलिक से मार्गदर्शन लिया और सक्षम क्रांति शैक्षणिक रेल बनानी शुरू की गई। बस देखते ही देखते विद्यालय के बच्चे राहुल, पूजा, करण, नवीन व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी सुरेश का बड़ा योगदान मिलता रहा और विद्यालय स्टाफ सदस्यों रवींद्र कुमार पटवा गणित अध्यापक, अजमेर सिंह एसएस मास्टर, वजीर शास्त्री व सुभाष पीटीआई का भरपूर सहयोग मिलने से ही ये मुकाम हासिल हुआ है। एक मजबूत टीम भावना से आगे बढ़ते हुए हमने स्कूल सुधार का प्रयास किया है। रुचिपूर्ण शिक्षण व चित्रात्मक शैली से बच्चे देखकर जल्दी सीखते हैं। इसी कड़ी में विद्यालय में सक्षम क्रांति सहायक रहेगी। उन्होंने बताया

कि ग्रामीण आँचल में छात्रों को सुलभ, सहज, सरल, सुंदर तरीके से पढ़ाने की दिशा में हमारे स्टाफ सदस्यों ने जीजान से काम किया है। हमें उम्मीद है कि इस वर्ष छात्र संख्या बढ़ाने में सक्षम क्रांति सहायक सिद्ध होगी। ग्रामीणों को विद्यालय की तरफ आकर्षित करने में यह प्रयास कारगर साबित होगा।

हमारे गाँव में खुशी की लहर लेकर आई सक्षम क्रांति - सरपंच प्रदीप कुमार

किसी भी गाँव के लिए गौरव की बात है कि वहाँ कार्यरत स्कूल स्टाफ निरंतर मेहनत करता हो। हमारे गाँव के लिए खुशी की बात ये है कि विद्यालय की मिडल हैड सविता रानी ने कमाल कर दिया। विद्यालय सुधार में उनके प्रयासों की जितनी तारीफ की जाए वो कम है। उन्होंने बताया कि सक्षम क्रांति रेल हमारे कमाचखेड़ा के लिए खुशियाँ लेकर आई है। बच्चे विद्यालय में मन

लगाकर पढ़ते हैं। उनका वहाँ सर्वांगीण विकास हो रहा है। समस्त स्टाफ सदस्यों को ग्राम पंचायत की तरफ से बहुत बहुत बधाई।

म्हारा स्कूल, म्हारा घर - राहुल

जब इस बारे में कक्षा आठवीं के छात्र राहुल से बात की गई तो उन्होंने बताया कि हमें अपने स्कूल पर गर्व है। स्कूल में हमारा खूब मन लगता है। खुशी-खुशी, खेलते खेलते यहाँ सीखने का मौका मिलता है। हम सबने मिलकर सक्षम क्रांति बनाने में पूरा योगदान दिया। सीखने-सिखाने का इससे बेहतर तरीका कुछ नहीं। म्हारा स्कूल, म्हारे घर जैसा लगता है।

अंग्रेजी प्राध्यापिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, लाहली
रोहतक

'असर' का असर

प्रमोद कुमार

असर 2018 की रिपोर्ट आ गई है जो 'प्रथम' के प्रतिनिधियों द्वारा उच्च अधिकारियों को प्रस्तुत कर दी गई है। इस रिपोर्ट में हरियाणा ग्रामीण का सर्वे किया गया है, जो 'प्रथम' की टीम द्वारा विभिन्न घरों में जाकर किया गया है। रिपोर्ट में राज्य की सभी डाइट के साथ-साथ विभिन्न शैक्षणिक कॉलेज का भी भ्रमण किया गया है। प्रदेश के कुल 628 गाँवों में 12,562 घरों को इसमें शामिल किया गया। 3 से 16 वर्ष के कुल 19,006 बच्चों का सर्वे किया गया, जिसमें 3 से 5 वर्ष के 3791, 6 से 14 वर्ष के 13,011 व 15 से 16 वर्ष के 2,204 बच्चे शामिल रहे। इसमें हिन्दी कौशल को परखने के लिए 14-,424 बच्चे तथा गणित कौशल परखने के लिए 14,191 बच्चे सर्वे में शामिल किये गये।

अब रिपोर्ट आ गई है तो इसका अध्ययन करना भी जरूरी है तथा राज्य के हिसाब से इसका विश्लेषण करना भी जरूरी है। सबसे पहले यदि नामांकन, विशेषकर बालिका नामांकन का अवलोकन किया जाये तो राज्य की स्थिति राष्ट्रीय स्तर से बेहतर है। अन्य ढाँचागत स्थिति जैसे पुस्तकालय, खेल का मैदान एवं सुविधा आदि बहुत बेहतर है। नामांकन का स्तर और प्राइवेट स्कूलों की ओर रुझान की बात करें तो 53.3 प्रतिशत बच्चे आज प्राइवेट स्कूलों में हैं। इसमें सबसे अधिक 76 प्रतिशत झज्जर, 70 प्रतिशत रोहतक में, 69 प्रतिशत महेन्द्रगढ़ में हैं तथा नूंह 22.8 प्रतिशत सबसे कम बच्चे प्राइवेट स्कूलों में हैं। इसके बाद फतेहाबाद 41 प्रतिशत तथा पंचकूला 44 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट विद्यालयों में हैं। 6 से 14 वर्ष के नॉन इनरोल बच्चों की बात करें तो नूंह में 9. 6 प्रतिशत बच्चे स्कूल से बाहर हैं, 6.5 प्रतिशत पलवल और 3.6 प्रतिशत के साथ फरीदाबाद में हैं अर्थात् मण्डल फरीदाबाद ही ऐसा है जहाँ आउट ऑफ स्कूल बच्चों का प्रतिशत सबसे ज्यादा है। जबकि कैथल और महेन्द्रगढ़ शून्य प्रतिशत के साथ सबसे ऊपर है। रिपोर्ट लर्निंग लेवल का आकलन करती हैं इसके विश्लेषण से पूर्व मैं अपना मत भी रखना चाहता हूँ, 18,000 बच्चों के साथ तीन कक्षाओं और 2 विषयों का किया गया सर्वे साइज बहुत छोटा है और मेरे अनुसार तर्कसंगत नहीं हैं। क्या सचमुच 18,000 बच्चे, 14 लाख बच्चों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। सर्वे करने वाले उदाहरण देते हैं कि चावल पका या नही, इसके लिए बर्तन में से कुछ चावल ही देखकर पता चल जाता है इसलिए इतना छोटा सैम्पल साइज काफी है। पर मेरा प्रश्न है कि क्या 14,500 स्कूल एक ही बर्तन है? जी नहीं। शिक्षा के क्षेत्र के जानकार और मनोविज्ञान के विशेषज्ञ विद्यार्थी को ही यूनिट मानते हैं। अगर इससे आगे बढ़ा जाये तो अध्यापक यूनिट है अर्थात् उसकी पूरी कक्षा में से दो चार बच्चों का सैम्पल उपयुक्त है। अब इसके बाद स्कूल यूनिट है और पूरे स्कूल में से कुछ बच्चों का परीक्षण भी स्कूल की स्थिति को बताने में सक्षम है। इसके बाद किसी भी प्रकार का सर्वे छोटे सैम्पल से उचित नहीं है, क्योंकि खंड स्तर पर और जिला स्तर पर सीधे शिक्षण का कोई केन्द्र नहीं है और न ही कोई कर्मचारी और प्रभारी जो खंड और जिला स्तर पर कार्यरत है सीधे अध्यापन में शामिल नहीं है। अतः इस सर्वे का कोई अर्थ नहीं है और इसके आधार पर पूरे राज्य की तस्वीर की सत्यता पर प्रश्न चिह्न है। 'प्रथम' से रुक्मणी बनर्जी और माधव चवन से अकसर इस विषय पर मेरी चर्चा हुई और मैंने कई बार उनकी प्रक्रिया पर प्रश्न पूछे है। अब असर की रिपोर्ट का असर ही इतना हो गया है कि इसके आते ही सब कुछ दिखने लगता है।

खैर अब रिपोर्ट आई है तो इसका विश्लेषण भी देख लिया जाये कक्षा तीसरी से पाँचवी के बच्चों के शैक्षणिक स्तर में जो विद्यार्थी कक्षा दूसरी की पुस्तकें पढ़ पाते हैं उसमें सबसे ऊपर रोहतक है जहाँ 76.3 प्रतिशत बच्चों में क्षमता है, दूसरे स्थान पर 75.4 प्रतिशत गुरुग्राम तथा 70.1 के साथ सोनीपत तीसरे स्थान पर है। 24. 10 प्रतिशत के साथ नूंह सबसे नीचे, 43.7 प्रतिशत के साथ जींद दूसरे स्थान पर और 45.7 प्रतिशत के साथ फरीदाबाद तीसरे स्थान पर है।

अब इन्हीं कक्षाओं के लिए अगर गणित के स्तर का आकलन किया जाये तो तीसरी से पाँचवी कक्षा के वो विद्यार्थी जिनको कक्षा दूसरी तक के स्तर का घटाव करने का कौशल प्राप्त है उसमें 83.3 प्रतिशत के साथ झज्जर पहले पायदान पर, 82.4 प्रतिशत के साथ रेवाड़ी दूसरे स्थान पर तथा 81.6 प्रतिशत के साथ रोहतक तीसरे स्थान पर है। यदि न्यूनतम स्तर वाले जिलों का उल्लेख करें तो 38.8 के साथ नूंह सबसे नीचे के पायदान पर है, वहीं पलवल 55.1 प्रतिशत और पंचकूला 56.6 प्रतिशत के साथ नीचे से दूसरे और तीसरे पायदान पर है।

अब उच्च प्राथमिक का अवलोकन भी कर लिया जाये इसमें कक्षा छठी से आठवीं के ऐसे बच्चे जो कक्षा दूसरी के लिए निर्धारित शैक्षणिक कौशलों की दक्षता रखते हैं अर्थात् दूसरी कक्षा की पुस्तक पढ़ सकते हैं, उसमें ये दक्षता 80 प्रतिशत विद्यार्थियों में है तथा रोहतक सबसे अधिक 92.6 प्रतिशत, गुरुग्राम 91 प्रतिशत तथा रेवाड़ी 88.7 के साथ सबसे ऊपर है और गणित का जिक्र करें तो 52 प्रतिशत के साथ नूंह सबसे नीचे के स्थान, 72 प्रतिशत के साथ पलवल दूसरे और 72.3 प्रतिशत के साथ फरीदाबाद नीचे से तीसरे स्थान पर है। वहीं पर घटाव और गणित की दक्षता के मामले में भिवानी 74. 4 प्रतिशत के साथ प्रथम, 73.9 प्रतिशत रेवाड़ी तथा 73. 3 प्रतिशत झज्जर तीसरे स्थान पर है। 36.1 प्रतिशत के साथ नूंह नीचे से सबसे पहले, फरीदाबाद 441 प्रतिशत के साथ दूसरे, 48.4 प्रतिशत के साथ करनाल तीसरे स्थान पर है।

मंडलवार अध्ययन किया जाए तो कुछ 6 मण्डल में आउट ऑफ स्कूल के मामले में फरीदाबाद की स्थिति सबसे खराब है जहाँ 2016 में 85 प्रतिशत विद्यार्थी स्कूल से बाहर थे जो 2018 में 77 प्रतिशत रह गये हैं। वहीं सबसे बेहतर हालात रोहतक मंडल के हैं ऐसा ही प्राइवेट स्कूल में दाखिले के बारे में भी है जहाँ रोहतक मण्डल

में 71.2 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट स्कूलों में जाते हैं और फरीदाबाद मण्डल में 39.8 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट स्कूल में हैं और लर्निंग आउटकम की भी यही स्थिति है।

अब देखा जाए तो पलवल, नूंह, फरीदाबाद जहाँ आउट ऑफ स्कूल के मामले में पीछे हैं वहीं लर्निंग आउटकम के मामले में भी पिछड़ रहे हैं अर्थात बच्चे स्कूलों से बाहर भी हैं और जो स्कूलों में हैं वे भी शैक्षणिक स्तर पर उच्चतर स्तर नहीं प्राप्त कर रहे हैं। जबकि रोहतक, सोनीपत, झज्जर दोनों क्षेत्रों में बेहतर हैं। इसको कुछ यूं भी समझा जा है कि शिक्षा का पूरा वातावरण बनाने में सभी क्षेत्रों में काम करना अनिवार्य है।

कुछ बातें इस रिपोर्ट में ऐसी भी हैं जिन पर प्रदेश सन्तुष्ट हो सकता है तथा प्रदर्शन अन्य राज्यों से बेहतर है, जैसे 100 प्रतिशत विद्यालयों में एसएमसी होना खेल के मैदान, खेल सामग्री आदि का होना, शुद्ध पेयजल का होना, शौचालय का होना, छात्र-अध्यापक अनुमति का संतुलित होना स्कूलों में बिजली व्यवस्था का होना, पुस्तकालय का होना। ये सब दर्शाता है कि ढाँचागत व्यवस्था या प्रावधानों के मामले में प्रदेश के सरकारी विद्यालय बहुत बेहतर है।

अध्यापक और छात्र उपस्थिति के बारे में संस्था द्वारा जब सर्वेक्षण किया गया उस समय प्राथमिक कक्षाओं में 77.7 प्रतिशत विद्यार्थी उपस्थित थे और 87 प्रतिशत अध्यापक उपस्थित थे वहीं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में 77.6 प्रतिशत विद्यार्थी और 88.5 प्रतिशत अध्यापक उपस्थित थे। यह आँकड़ा राष्ट्रीय स्तर से या अन्य राज्यों की तुलना में बहुत बेहतर है।

संस्था द्वारा मल्टीग्रेड टीचिंग का भी सर्वे किया है प्रदेश में कक्षा दूसरी और चौथी के क्रमश 40.9 प्रतिशत तथा 36.2 प्रतिशत विद्यार्थी मल्टीग्रेड टीचिंग में थे। हैरानी की बात ये है कि वर्ष 2010 में यह संख्या 33 प्रतिशत थी तथा चौथी कक्षा में 30.1 प्रतिशत थी। यह मेरी समझ से परे है क्योंकि फिलहाल छात्र-अध्यापक अनुपात सबसे समुचित और संतुलित है।

राष्ट्रीय छात्र-अध्यापक अनुपात और आरटीई में परिभाषित छात्र अध्यापक अनुपात 30:1 है जबकि प्रदेश में इसे 25:1 किया गया है फिर भी मल्टीग्रेड टीचिंग का दायरा बढ़ रहा है, ये खोज का विषय है। हालांकि राष्ट्रीय स्तर पर भी वर्ष 2010 में एमजीटी 55.2 प्रतिशत विद्यालयों में था जो बढ़कर 63.4 प्रतिशत हो गया है।

रिपोर्ट का अवलोकन करने पर पाया गया कि छात्र अध्यापक अनुपात के मामले में जहाँ 2010 में केवल 40.3 प्रतिशत विद्यालयों में समुचित पीटीआर था वहीं 2018 में 76.3 प्रतिशत हो गया है। मेरा यहाँ भी प्रश्न चिन्ह् है। वर्तमान में कक्षा 1 से 5 के मामले में छात्र अध्यापक अनुपात अधिक संतुलित हो गया है। वैसे राष्ट्रीय स्तर पर अभी केवल 38.9 प्रतिशत विद्यालय ही यह लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं।

प्राइवेट स्कूलों की तरफ रुझान में राष्ट्रीय स्थिति 30.9 प्रतिशत है। हरियाणा 55.3 प्रतिशत के साथ सबसे ऊपर है। उसके बाद पंजाब 52.2 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश 49.7 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर है।

आउट ऑफ स्कूल की राष्ट्रीय औसत 4.1 प्रतिशत के मुकाबले प्रदेश की 2 प्रतिशत संतोषजनक है, लेकिन पड़ोसी राज्य पंजाब के 1.6 प्रतिशत के मुकाबले कम है। हालांकि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान 7 प्रतिशत से अधिक है।

यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि प्रदेश में 15 से 16 वर्ष आयु की 6.8 प्रतिशत लड़कियाँ स्कूल से बाहर हैं जिन पर 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम में फोकस किया जाना अनिवार्य है। इसके लिए नूंह, मेवात और पलवल में प्राथमिक विद्यालयों को मिडल बनाना आवश्यक है।

अब अंत में लर्निंग लेवल की राष्ट्रीय तुलना कर ली जाये क्योंकि अध्यापक, कमरे, स्कूल, चारदीवारी, शौचालय इन सब के होने का लाभ तब होगा, जब बच्चे उच्चतम शैक्षणिक स्तर को प्राप्त करें।

पूरी रिपोर्ट का आकलन बहुत दिलचस्प हैं इसमें उन सब बिन्दुओं को नकारा जा सकता है जिसमें हमारी सहमति नहीं है। हम केवल आकलन ही लगा सकते हैं। सीधे-सीधे आकलन के दम पर कोई दावा नहीं कर सकते, हमें कुछ तथ्य, कुछ स्रोत, कुछ आँकड़े चाहिएँ जो हमारी राय को दृढ़ता या मजबूती प्रदान करते हों।

बिल गेट्स ने कहा है कि दुनिया उतनी बदतर नहीं है जितनी हम सोचते हैं। हम आंकड़ों, तथ्यों और विभिन्न सर्वे और खोज का गम्भीरता से लें और नये नजरिये से देखें तो स्थिति बहुत बेहतर है।

हमें भी असर की रिपोर्ट को स्वीकार करना चाहिए और जहाँ-जहाँ हम बेहतर कर रहे हैं उस पर गर्व करना चाहिए और जहाँ बेहतर नहीं हैं वहाँ पर कार्य करने के लिए योजना बना कर जुट जाना चाहिए।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

बच्चों ने देखे केरल के समुद्री तट

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

हरियाणा स्कूली शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा आयोजित किये जाने वाले केरल के चेरतला में लगने वाले नेशनल एडवेंचर कैम्प का मुझे इन्तजार था। क्योंकि एक तो वहाँ मनोरम प्रकृति, नदियाँ, सागर, झरने, झीलों, कतार में खड़ी रंग-बिरंगी नौकाओं, कलात्मक सुन्दर मकानों, आसमां छूते नारियल के पेडों, झीलों में खिले कमल रक्त कमल व श्वेत कमलों, समुद्र तटों, मन मोहने वाले टापुओं की फोटोग्राफी के बढ़िया अवसर मिल जाते हैं। एक दिन अचानक शिक्षा विभाग, पंचकूला में कार्यरत कार्यक्रम अधिकारी व एडवेन्चर कैम्पों के इन्चार्ज, आयोजक रामकुमार का फोन आया 'आप केरल के एडवेंचर कैम्प के लिए तैयार रहो। आपको हमारे साथ चलना है।' अगले दिन फतेहाबाद जिला शिक्षा अधिकारी दयानन्द सिहाग का भी फोन आया 'आपको केरल एडवेन्चर कैम्प के आदेश कर दिये हैं।' मैंने केरल जाने की तैयारी की। इस कैम्प में प्रत्येक जिले से नौ छात्राओं की बेस्ट डांस की टीम तथा उनके साथ एक अध्यापिका जानी थी। इस तरह से पूरे हरियाणा से कुल 198 लड़कियाँ तथा 22 अध्यापिकाओं को जाना था यानि कुल 220 छात्राएँ व शिक्षिकाएँ। इनके साथ पाँच-छः स्टाफ सदस्य थे जिनमें मेरे अलावा बिजेन्द्र धनखड़, डीओसी पंचकूला, सीयाराम शास्त्री, डीओसी करनाल, श्रवण कुमार करनाल, रोहिणी पानीपत, सरोज (फरीदाबाद) थे। सभी बच्चों को अध्यापिकाओं के साथ 20 दिसम्बर को पंचकूला के सैक्टर-15 स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एकत्रित होना था। शाम तक सभी विद्यालय पहुँच गए। सबको खाना खिलाने के उपरान्त कार्यक्रम अधिकारी व एडवेंचर टूर के इन्चार्ज रामकुमार ने सभी को केरल की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी तथा पूरे सफर में अनुशासित होकर सफर का आनन्द लेने, प्रकृति का सम्मान करने व हर चीज को, वहाँ की कला संस्कृति व भौगोलिक वातावरण को बारीकी से देखने व उसका अध्ययन करने की सलाह दी।

अगले दिन 21 दिसम्बर की सुबह सात बजे नाश्ते के बाद बसों में बैठकर चण्डीगढ़ रेलवे स्टेशन की ओर चले। स्टेशन पर केरल जनसम्पर्क क्रांति तैयार खड़ी थी। रेल में बैठने से पहले रामकुमार व विजेन्द्र धनखड़ ने सभी

को आरक्षित सीटें बाँट दीं। नौ बजकर तीस मिनट पर रेल चली तो सबके चेहरे पर अथाह खुशी व ऊर्जा से भरी मुस्कराहट थी। सफर लम्बा था। 21 की सुबह चलकर 23 को दोपहर बाद रेल को अल्पपी स्टेशन पर पहुँचना था। इस सफर की अपनी दुनिया होती है। दो-तीन दिन तक इसी रेल में खाना-पीना, सोना-जागना, गाना-बजाना, तरह-तरह के लोगों से परिचित होना। उनकी वेशभूषा, उनकी भाषाओं से परिचित होना, रास्ते में आने वाले तरह-तरह के खेत, मरुस्थल, जंगल, पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ, झरने, झीलें और झीलों में अनेक जगह खिले श्वेत, लाल, गुलाबी कमल। इसी सफर में दिन का उजाला, रात का अंधेरा, कभी सूर्योदय की खूबसूरती तो कभी सूर्यास्त के अद्भुत आकर्षक नजारे। चम्बल व नर्मदा जैसी नदियों के लम्बे-लम्बे पुलों से गुजरना, अंधेरी गुफाओं को पार करना अपने आप में रोचकता से भरा सफर होता है। इन सबको निहारने वाला, प्रकृति की अथाह शक्ति को महसूस करने वाला यात्री कभी बोर नहीं होता। फिर अगर एक साथ करीब 200 छात्राएँ हो तो बोर होने का सवाल ही नहीं उठता। सफर के रास्ते में आने वाली भौगोलिक स्थिति, मनमोहक नजारों से, विभिन्न राज्यों की संस्कृति से बच्चे परिचित हों, अपने देश को जानें, अब तक किताबों में पढ़ते आ रहे दृश्यों, स्थलों की जानकारी बच्चे अपनी आँखों से देख सकें, समझ सकें, यही शिक्षा विभाग का उद्देश्य है। अपने देश को जानने, उनके ज्ञान में अति वृद्धि करने, आत्मविश्वास पैदा करने, शारीरिक क्षमता बढ़ाने तथा हिन्दुस्तान की विविध संस्कृतियों, अनेकता में एकता की ताकत महसूस करने के लक्ष्य से ही इन एडवेंचर टूरों का आयोजन किया जाता है।

राजकीय विद्यालयों के वे बच्चे जो प्रतिभावान, ऊर्जावान तो हैं, किन्तु अधिकतर गरीब या सामान्य परिवार से होने के कारण लंबी यात्राओं पर नहीं जा सकते। उनके लिए ये कैम्प वरदान साबित हो सकते हैं। शिक्षा विभाग की इच्छा है कि वो बच्चे जो देश का भविष्य हैं, आगे चलकर जिन्होंने देश के विकास की बागडोर अपने हाथ में लेकर देश को आगे बढ़ाना है वो बच्चे किसी भी तरह से पिछड़ें नहीं। क्योंकि देश के बच्चे ऊर्जावान होंगे तो निःसन्देह देश तरक्की करेगा।

रेल कुछ घण्टों के उपरान्त चण्डीगढ़ से दिल्ली होती हुई मथुरा की ओर बढ़ी। हमने सभी डिब्बों में घूम-घूम देखा कि कहीं किसी कोई दिक्कत तो नहीं? बच्चे बतियाने में, बाहर के नज़ारे देखने में व्यस्त थे। हरियाणा के 22 जिलों के करीब सवा दो सौ बच्चे व शिक्षिकाएँ एक दूसरे जिले के बच्चों से परिचय बढ़ा रहे थे। यहीं से भाषा, वेशभूषा, संस्कृतियों व विचारों का आदान-प्रदान आरम्भ हो गया था। हमें पूरी रेलगाड़ी हरियाणामयी लग रही थी। सभी ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला की लोगो छपी टी-शर्ट पहन रखी थी। समय-समय पर सभी के लिए खाना-पानी, चाय की व्यवस्था थी। रात को सर्दी न लगे इसलिये सभी को विभाग की ओर से गर्म स्लीपिंग बैग दे रखे थे।

लम्बे सफर के बाद जैसे ही मुम्बई का बसई स्टेशन आया, जगह-जगह खूबसूरत झीलें दिखाई देनी शुरू हुईं। कुछ झीलों में बच्चों को जैसे ही खूबसूरत कमल के फूल दिखाई दिये, बच्चों के मुँह से 'वाह!' कितने सुन्दर कमल हैं, निकला। यहाँ तक आते-आते भौगोलिक स्थिति, फसल, वातावरण सब बदल गया था। हरियाणा से जहां कँपकपाने वाली सर्दी से सफर आरम्भ किया था, अब सामान्य ही नहीं बल्कि थोड़ी-थोड़ी गर्मी लगनी शुरू हो गई थी। गर्म कपड़ों की जगह आधे बाजू की शर्ट या टी-शर्ट ने ले ली थी। आगे बढ़ने पर अनेक छोटी-बड़ी, लम्बी गुफाओं से रेल गुजरती रही। बच्चों की रोचकता बनी रही। कई बार हमारी रेल दूसरी रेल की क्रॉसिंग के लिए ऊँचे पहाड़ों की घाटियों में खड़ी भी हुई। बच्चों ने नीचे उतरकर सेल्फी ली। बच्चे रास्ते में आने वाली नदियों, जंगलों, झीलों के फोटो भी ले रहे थे, अपने सफर को यादगार बनाने के लिए। हरियाणा, दिल्ली, फिर हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडू होते हुए केरल में प्रवेश के साथ ही सफर को और भी उत्साहित बना दिया। बड़ी-बड़ी झीलों व उनमें खिले कमल, लक्ष्मी का सिंहासन लाल कमल तथा सरस्वती का आसन श्वेत कमल से ढकी झीलों ने सबके मन प्रफुल्लित कर दिए। बच्चे बहुत कुछ पहली बार देख रहे थे इसलिए अधिक उत्साहित थे। ये सब रेलवे कोंकण का हिस्सा था।

अगले दिन हम सुबह-सुबह केरल की जमीं पर थे। हमारी रेल अम्बाला, नई दिल्ली, मथुरा, कोटा, वडोदरा, बसई रोड़ (मुम्बई), पनवेल, रतनागिरी, मडजोन, उडूपी, मैंगलौरु केसार गोड, कन्नूर, कोझी कोड़े, शोरानुर, थरीससुर, एरणाकुलम होती हुई चेरतला पहुँची। हम खूबसूरत झीलों, खिले कमलों, नारियल व केलों की खेती की जमीन पर थे। झोपड़ीनुमा, किन्तु अति सुन्दर, झरोखों व हवादार मकानों को देखकर मन कर रहा था कि काश हमारे भी इतनी हरियाली के मध्य प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच इस तरह के मकान होते। करीब 12 बजे

हम अल्लपी स्टेशन पर उतरे तो, हम सभी को चेरथला ले जाने के लिए बसें पहले से ही तैयार खड़ी थी। चेरतला के एक स्कूल में ठहरने की व्यवस्था थी। जो समुद्र से मात्रा पैदल की 3 मिनट की दूरी पर था।

स्कूल में जाकर सब बच्चों को कमरे अलॉट कर दिये गए। खाना खाकर, नहा-धोकर सभी को इकट्ठा किया गया। फिर लाइन में चले समुद्र की ओर, सूर्यास्त होने में करीब एक घंटा शेष था। सभी के मन में गहरी इच्छा व उत्सुकता थी कि वे समुद्र पर सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य देखें। सभी को पानी में न घुसने की हिदायत देकर जिले वार बच्चे साथ आई अध्यापिकाओं की देख-रेख में समुद्री नजारे लेने को कहा गया। बच्चों ने जैसे ही विशाल व अनन्त समुद्र देखा, उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वे सभी देखकर उछलने लगे। जैसे उन्हें कोई अमूल्य वस्तु मिल गई हो। हमारे सामने क्षितिज तक फैला अपनी ताकत का प्रदर्शन करता हुआ समुद्र था। भयंकर लहरें सागर तट से जोर से टकरा कर वापस समुद्र में विलीन हो रही थीं। इन लहरों में जहाँ संगीत था, तेज वेग था, साहस था, अतुलनीय सौन्दर्य था वहीं ये डरावनी भी लग रही थीं।

बच्चे उत्सुकता से समुद्र को निहार रहे थे, सेल्फी व फोटो ले रहे थे। लहरों संग आए असंख्य केकड़ों को देख खुश हो रहे थे। मछलियों को पकड़ने के लिए पंछी लहरों संग उड़ रहे थे। समुद्र में बहुत से मछुवारे अपनी छोटी-छोटी नौकाओं पर सवार होकर मछलियाँ पकड़ने में मशगूल थे। बड़ी नौकाएँ या बड़े जहाज भी समुद्र के गहरे पानी में खड़े थे। सूर्यास्त होने को था। सूरज ने अपनी लालिमा समुद्र में घोलनी शुरू कर दी। कुछ देर बाद सूरज डूबने को था। जैसे ही वह पानी के दूसरे किनारे क्षितिज पर पानी में डूबता नजर आया, समुद्र का पानी अधिक

लाल, नारंगी, पीला होता गया। ऐसा लग रहा था कि सूरज पानी में घुल रहा है और उसके रंग से समुद्र भी रंगीन हो रहा है। धीरे-धीरे सूर्य अस्त हुआ जैसे सारा का सारा समुद्र में घुल गया हो या डूब गया हो। सभी छात्राएँ इन अद्भुत, अद्वितीय, अवर्णनीय, अविस्मरणीय व रोमांचित करने वाले दृश्यों को निहार रहे थे, अपने को धन्य समझ रहे थे। इतने में एक जानी-पहचानी आवाज आई, सबको एक जगह बुलाने की। कैम्प के इन्चार्ज रामकुमार ने सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए समुद्र की अथाह ताकत व उसके महत्त्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने केरल के प्राकृतिक सौन्दर्य व सम्पदा की जानकारी दी। समुद्र, पेड़-पौधे, प्रकृति का सम्मान करने व उन्हें स्वच्छ रखने की सलाह दी। उन्होंने प्रकृति के सम्मान में एक गीत गाया जिसमें सभी बच्चों ने सुर से सुर मिलाया। अभी अंधेरा होने को था। पंछी अपने आशियाने की ओर लौट रहे थे। सूरज भी डूब चुका था। समुद्र का दृश्य भी बदल रहा था। किन्तु लहरें और ऊँची होती जा रही थीं। हमने बच्चों की पंक्ति बनवाई तथा चले अपने निवास की ओर। अगले दिन सुबह बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए योग करवाया गया। फिर प्रार्थना के बाद सभी को नाश्ता दिया गया तथा बाद में कक्षाएँ लगाई गईं। इस दौरान बच्चों को जीवनोपयोगी व ज्ञानवर्धक बातें बताई गईं तथा कैम्प इंचार्ज रामकुमार ने कुछ कहानियाँ सुनाकर जीवन में सकारात्मक सोच उत्पन्न करने की सीख दी।

अगले दिन समुद्र के किनारे-किनारे ट्रैकिंग की ताकि बच्चे समुद्र से भली-भाँति परिचित हो सकें। इस ट्रैकिंग में बच्चों को समुद्र किनारे ढ़ेर सारे केकड़े, शंख, सीपी मिले। कुछ बच्चों ने शंख व सीपियों का संग्रह किया। एक तरफ समुद्र व दूसरी ओर नारियल के जंगल। बीच में समुद्री रेत, वनस्पतियों, पक्षी, रंगीन नौकाएँ थीं। मछुआरे मछलियाँ पकड़ रहे थे। आगे जाकर मछुआरों का गाँव था। बच्चों को उनकी संस्कृति, रहने-सहने की जानकारी दी। जाल बुनने का तरीका बताया। दोपहर को

बच्चों के लिए वहीं पर खाना तैयार होकर आ गया। पहले सभी ने ठंडा पिया, एक घण्टे बाद नारियल के पेड़ों के बीच, समुद्र के किनारे सबको भोजन दिया गया। यहाँ बैठकर खाने का अपना अलग ही आनन्द था। शाम को बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम था। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के बच्चों ने जो जोश दिखाया काबिले तारीफ था। बच्चों में सचमुच अथाह ऊर्जा होती है। बच्चे सपनों को पंख लगाकर उड़ना चाहते हैं। वे सफलता के क्षितिज कभी पार जाना चाहते हैं। हमने महसूस किया कि ये बच्चे सचमुच मेहनती, उत्साही व कुछ कर गुजरने वाले हैं। ये खुली हवा में उड़कर नभ को छूने की ऊर्जा रखते हैं। और इस उड़ान को पंख लगाने का काम शिक्षा विभाग के अधिकारी कर रहे हैं।

अगले दिन दूसरी तरफ ही समुद्र के किनारे की ट्रैकिंग थी। उनको बीच भी दिखाना था। उससे अगले दिन बसों में सवार होकर केरल के प्रसिद्ध आई लैंड पाथिरामणल टापू की ओर चले। करीब दो घंटे के सफर के बाद हम मोहम्मा झील पर उतरे। इस झील का सौन्दर्य देखते ही बनता है। इस झील की हाउस वोट पर्यटकों को अपनी ओर खींचती है। खाना पीना, रहना-सहना आदि कई तरह की सुविधाओं से युक्त ये हाउस वोटें अति आरामदायक, मजेदार व कलात्मक हैं। कला की दृष्टि से श्रीनगर की डल झील की हाउस बोटों से भी खूबसूरत। सभी बच्चों को बड़ी नौकाओं में बैठाकर झील के बीच में स्थिति रहस्यमयी टापू पर ले जाया गया, जहाँ ढेर सारी वनस्पतियाँ, जड़ी-बूटियाँ व अनोखे पेड़ हैं। बताते हैं कि ये टापू एक रात अचानक विशाल झील समुद्र का ही एक हिस्से से ऊपर उठकर दिखने लगा। जो मछुवारे अपनी किश्तियाँ लेकर सुबह समुद्र में गए थे, शाम को लौटे तो उन्हें एक टापू दिखाई दिया। उसके बाद ये थोड़ा बड़ा हुआ तथा पेड़-पौधे उग आए। हमारे साथ गए केरल निवासी सहायक जिला आयुक्त स्काउट जीजी चंद्रन ने बताया कि यहाँ कई पेड़ ऐसे हैं जो सोना धातु होने की दिशा बताते हैं। उनकी पत्तियों से उसके आस-पास सोना होने के संकेत मिल जाते हैं। पाथिरामणल टापू पर संजीवनी बूटी भी है। यहाँ लोक में किवन्दन्ती है कि जब लक्ष्मण मूर्छित होने पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने के लिए गए व पूरा पहाड़ ही उठा लाए तो लंका जाते वक्त यहाँ से गुजरे थे। तब तक संजीवनी बूटी का पौधा यहाँ गिर गया तथा उग गया। उसके बाद यहाँ और पौधे भी उग आए। यहाँ सर्दियों में हजारों प्रवासी पक्षी भी आते हैं। एक रोचक दृश्य ये भी है कि इस टापू से केरल के पाँच जिलों कोलम, अल्लपी, कोटेम, अरणाकुलम व पतनमटीटा की सीमाएँ मिलती हैं। बच्चों को यहाँ घुमाया गया तथा पूरी जानकारी दी गई, जो कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। उसके उपरान्त बच्चों को नाव में बिठाकर टापू का पूरा चक्कर लगवा कर वापिस झील के किनारे छोड़ा। यहीं पर बच्चों का खाना था। शाम को मोहम्मा गाँव की पंचायत की इच्छा व सहयोग से एक सांस्कृतिक संध्या गाँव में ही आयोजित की गई जिसमें हरियाणा व केरल दोनों की प्रस्तुतियों ने

रंग जमाया। हरियाणा के लोक नृत्य के साथ सभी दर्शक नाचते नजर आए। हरियाणवी गीतों के बोल बेशक उनके समझ में न आए हों किन्तु संगीत व बच्चों के लोकनृत्य ने जैसे पूरा गाँव को ही नचा दिया था, किन्तु शान्त तरीके से। यहाँ पर प्रतिभागी बच्चों को पंचायत की ओर से सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम के बाद जब हमें गाँव वाले बस तक छोड़ने आए तो उनकी आँखों में जुदाई के आँसू साफ झलक रहे थे। सामान्य विभाग केरल सरकार के अधिकारियों तथा जीजी चन्द्रना, सहायक जिला आयुक्त (स्काउट), चेरथला, गीरिश डीओसी स्काउट), लिनेट (लेडी स्काउट), मास्टर, विष्णु, स्काउट मास्टर, मिनी (शिक्षिका), पीटर अलैक्जेंडेर (सब इंस्पेक्टर, केरल पुलिस), प्रसाद जोशे (सेवानिवृत्त अधिकारी) का इस एडवेंचर कैम्प के दौरान विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

अगले दिन कहीं बाहर की यात्रा रखने की बजाय सांस्कृतिक कार्यक्रम दिन में करना तय हुआ क्योंकि इस दिन हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला के संयुक्त निदेशक, राजीव प्रसाद जी बच्चों का हौसला बढ़ाने व उन्हें आशीर्वाद देने आ रहे थे। सबसे पहले श्री प्रसाद ने बच्चों की ले आउट देखी। बच्चों की मेहनत, लगन व कला कौशलता देखकर वे गद्‌गद हो गए। उसके बाद उन्होंने बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम देखा। उन्होंने कहा कि बच्चों का ये ऊर्जा व उत्साह से भरा कार्यक्रम देखकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ है। हम गर्व से कह सकते हैं हरियाणा के सरकारी स्कूलों के बच्चे किसी से किसी भी तरीके से कम नहीं है बल्कि हम कह सकते हैं कि ये बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक व कलात्मक गतिविधियों में भी आगे हैं। इन बच्चों को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। इनमें जो कला है, कुछ करने का जज़्बा है। वह अवश्य देश को आगे ले जाएगा, कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने व उन्हें शारीरिक रूप से भी मजबूत करने की बात कही। राजीव प्रसाद ने सभी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देने वाली छात्राओं की टीम के साथ फोटो खिंचवाए। उन्हें बेहतर से बेहतर करने के लिए उत्साहित किया। बच्चों को एक दिन बाजार में घूमने का दिया गया तो अगले दिन अल्लपी बीच पर जाने की योजना बनाई। बच्चों में प्रतिभा निखार व सर्वांगीण विकास के लिए अनेक प्रतियोगिताएँ भी करवाई गईं। सभी बच्चों में आत्मविश्वास जगाने, कठिनाइयों का सामना करने, हर परिस्थिति से निपटने, आत्म रक्षा करने के लिए सिखाया गया। जहाँ ये गतिविधियाँ बच्चों के लिए नई थीं, वहीं मनोरंजक व मजेदार भी थी।

अन्तिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त बच्चों को प्रमाण पत्रा व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। नृत्य, गायन, पेंटिंग, रंगोली, मेहंदी, सांझी बनाओ, ले आउट, यात्राा वृत्तान्त लेखन विजेताओं को सम्मानित किया गया। रामकुमार का प्रयास रहा कि कम से कम एक पुरस्कार तो प्रत्येक जिले की झोली में जाए ताकि सभी बच्चों के चेहरे पर मुस्कान हो। कैम्प इंचार्ज रामकुमार के शालीन व्यवहार ने यात्रा का मजा दोगुणा कर दिया। बच्चों के मन को समझकर उनके हित में, उनके सर्वांगीण विकास, प्रतिभा निखार एवं ज्ञानवर्धन के लिए किये गए इन कैम्पों के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारी बधाई के पात्र हैं। ये ऐसा आयोजन है जिसे छात्रा-छात्राएँ कभी भूल नहीं सकेंगे। ये कैम्प यात्रा सदा उनके जीवन में मधुर याद बनकर उनके होठों पर हँसी लाने का काम करती रहेगी।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एमपी रोही, फतेहाबाद

22 भाषाओं के संगम में डुबकी लगाई विद्यार्थियो ने

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाये गये 'भाषा संगम' कार्यक्रम में 22 दिनों में सीखे 22 वाक्य

अशोक वशिष्ठ

राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ाने के लिए देश के समस्त नागरिकों द्वारा परस्पर भाषाई सांस्कृतिक, सामाजिक व अन्य विविधताओं को समझना व उसका आदर करना अत्यंत आवश्यक है। विविधता में एकता का अनुपम उदाहरण भारत देश में देखने को मिलता है जहाँ अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, खान-पान, पहनावा, तीज-त्योहार आदि में विविधता है, परन्तु पारस्परिक समादर की भावना इन सभी को जोड़े हुए है। भाषा की समझ से किसी भी राज्य के सभी पक्षों को जानना आसान हो जाता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में इस बात को समझते हुए विभिन्न आयोगों ने राज्य की अपनी भाषा से अलग दूसरी व तीसरी भाषा सिखाने पर बल दिया। त्रिभाषा-सूत्र अन्य भाषाओं को सीखने का अवसर देता है। आज आधुनिकता की दौड़ में आगे रहने को आतुर अधिकतर अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिला रहे हैं। भाषा शिक्षण में भी भारतीय भाषाओं की बजाय फ्रेंच व जर्मन भाषा पर अधिक जोर दिया जा रहा है। जिससे छात्र 'वैश्विक' तो हो रहे हैं परन्तु अपने देश की अन्य भाषा न सीखकर भारत के विभिन्न राज्यों की व्यापक समृद्ध भाषा संस्कृति-साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के माध्यम से भारतीयों को विभिन्न राज्यों की भाषाएँ सीखकर संस्कृति को जानने का आह्वान किया। कितना अच्छा हो जब उत्तर भारत के नागरिक दक्षिण भारत की कन्नड़, तमिल, तेलगू व कोंकणी भाषा सीखें और दक्षिण भारत निवासी उत्तर भारत की कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी सीखें। इसी प्रकार पश्चिमी भारत के लोग पूर्वी भारत की, बोड़ो, बांग्ला, असमी, उड़िया भाषाओं को तथा पूर्वोत्तर भारत के लोग पश्चिमी भारत की गुजराती, मराठी भाषाओं को सीखें।

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के निर्देशानुसार 20 नवम्बर से 21 दिसम्बर 2018 तक देश के सभी राज्यों के शिक्षा बोर्ड से संबंधित विद्यालयों में व शैक्षणिक संस्थानों में भाषा-संगम कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं के पाँच वाक्य प्रतिदिन प्रार्थना सभा में छात्रों को सिखाए-समझाए गये। छात्रों ने बड़े चाव से न केवल इन्हें सीखा बल्कि विद्यालय, घर-परिवार व रिश्तेदारी तक में इनका बखूबी प्रयोग किया।

हरियाणा में बेहतर प्रयास करने वाले विद्यालयों में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीसवाल, हिसार, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बजघेड़ा, गुरुग्राम, राजकीय माध्यमिक विद्यालय चंदेनी नूँह, विशेष रूप से शामिल हैं, जिन्होंने न केवल छात्रों को भाषा संगम के तहत 22 भाषाओं के 5 वाक्य सिखाए अपितु छात्रों को विभिन्न भाषाएँ सिखाने की प्रक्रिया के वीडियो यूट्यूब चैनल पर साँझा किए।

ये भाषा संगम का प्रभाव है छात्र-अध्यापकों को अभिवादन हेतु नमस्कार के साथ-साथ नमोनमः सत्श्री अकाल, जोहार, आजियां, वणक्कम, आदाब का सम्बोधन कर रहे हैं। इसी प्रकार परस्पर मिलते समय छात्र ''आप कैसे हैं?'' पूछने की बजाए ''तू कसो आसा'', ''सुधमाणो'', ''तुम्ही कसे आहात'', ''तुहाडा की हाल है'' आदि वाक्यों का प्रयोग बड़े चाव से कर रहे हैं और पूछने पर भाषा संगम की जानकारी दे रहे हैं।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीसवाल में हिन्दी प्रवक्ता ने छात्रों को संबंधित भाषा के परिवार, क्षेत्र,

लिपि व उससे जुड़े प्रसिद्ध घटनाक्रम की भी जानकारी दी। आनंददायक शनिवार के दिन इन्हीं भाषाओं से जुड़े गीत सुनाए तो छात्रों ने वास्तविक आनन्द का अनुभव किया। अन्य विद्यार्थियों के लिए भी यह कौतुक का विषय रहा।

भाषा संगम ने करोड़ों छात्रों को एक-दूसरे की संस्कृति, भाषा-लिपि, साहित्य के समीप लाने का अवसर प्रदान किया है। 5 वाक्यों को समझने व सीखने के साथ देश की सांस्कृतिक व भाषायी एकता का महान भाव सार्थक हुआ है। यूट्यूब पर प्रसारित वीडियो की संख्या से इस पुनीत कार्यक्रम को सफल-सार्थक बनाने में लगे शिक्षकों, छात्रों के साथ शैक्षणिक संस्थानों की सकारात्मक सोच को प्रमाणित करती है।

22 भाषाएँ जिनके वाक्य सिखाए गये -

1. आसामी, 2. बंगाली, 3. बोड़ो, 4. डोगरी, 5. गुजराती, 6.हिन्दी, 7.कन्नड़, 8.कश्मीरी, 9. कोंकणी, 10.मैथिली, 11.मलयालम, 12.मणिपुरी, 13.मराठी, 14. नेपाली, 15.उड़िया, 16.पंजाबी, 17.संस्कृत, 18.संथाली, 19.सिंधी 20.तमिल, 21.तेलगु, 22.उर्दू

पाँच वाक्य -

1. नमस्कार ।
2. आपका नाम क्या है?
3. मेरा नाम लक्ष्मी है।
4. आप कैसे हैं?
5. मैं ठीक हूँ।

22 दिन में 22 भाषाओं के पाँच वाक्य प्रतिदिन प्रार्थना सभा में बेशक 5 मिनट में समझा दिए गए हों, परन्तु इनका प्रभाव लम्बे समय तक देखा जा सकेगा। इस कार्यक्रम से छात्रों के संग शिक्षकों के भी आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। भाषा संगम को निश्चित रूप से परिचयात्मक परियोजना न मानकर इसमें और अधिक वाक्यों को जोड़कर तथा प्रत्येक वर्ष आयोजित कराने की दिशा व्यापक, सार्थक, बहुउद्देशीय कार्यक्रम माना जाए तो यह राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ाने में अपना भरपूर योगदान देने वाला सार्थक प्रयास सिद्ध होगा।

प्रवक्ता
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सीसवाल, जिला-हिसार

भारी बस्ता

बहुत सताए भारी बस्ता मुझे
न भाए भारी बस्ता पापा,
थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

चैन चुराए, रैन चुराए
नाच नचाए भारी बस्ता।
पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

बस्ते की है लीला न्यारी
सब जाते इस पर बलिहारी
भाँति-भाँति के स्वप्न दिखाकर
मन भरमाए भारी बस्ता।
पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

लेकर इसे चला नहीं जाता
इसके बोझ से सिर चकराता
हम नन्हे-मुन्ने बच्चों को
बहुत रुलाए भारी बस्ता।
पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

कठिन हुआ खेलना-खाना
भूल गए हँसना-मुस्काना

बलवन्त
ग्राम- जूड़ी, पोस्ट- तेन्दू
राबर्टसगंज, सोनभद्र- 231216 (उ.प्र.)
Email- balwant.acharya@gmail.

चौथी कक्षा की नन्ही गायिका : साक्षी सैनी

मैं अपने एक शिक्षक साथी को किसी अन्य कार्यक्रम में साथ ले जाने के लिए पंचकूला के सैक्टर-12ए में स्थित सार्थक राजकीय समेकित आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में गया हुआ था। प्रार्थना सभा शुरू हो चुकी थी। मैं विद्यालय प्रांगण में ही अपने साथी के इन्तजार में विद्यालय के एक अन्य शिक्षक सुनील धनखड़ के साथ खड़ा था। प्रार्थना के बाद कुछ बच्चों ने अपनी प्रस्तुति देनी थी। हम बातों में व्यस्त थे कि मेरे कानों में एक मधुर आवाज़ पड़ी-

मत करिये ऐसी भूल बाबू कदे मैं भी अनपढ़ रह जाऊँ
पढ़ लिख कै नै बाबू तेरा मान बढ़ाणा चाहूँ सूँ।
मेरे साथ की सारी छोरी बाबू पढ़ण नै जावैं सैं,
मात-पिता नैं आच्छी लागैं, पढ़-लिख सब आवैं सैं।
दिये भेज तूँ स्कूल बाबू मैं भी पढ़ना चाहूँ सूँ।

आवाज़ इतनी सुरीली थी कि मैंने एक बार तो सोचा शायद किसी बड़ी गायिका के गीत की रिकार्डिंग चल रही होगी। फिर मैंने पलट कर देखा तो माइक में एक छोटी-सी मासूम बच्ची गा रही थी। मुझे यह देख सुखद आश्चर्य हुआ कि इतनी छोटी बच्ची इतने आत्मविश्वास से व इतने गज़ब के सुर में कैसे गा सकती है। मेरे पास खड़े शिक्षक से मैंने पूछा तो पता चला कि ये लड़की चौथी कक्षा में पढ़ रही है और अपनी आवाज का जादू कई सालों से चला रही है। जानकर उस नन्ही कलाकार बच्ची से मिलने की उत्सुकता हुई। मैं उस शिक्षक के साथ प्राचार्य के दफ्तर गया तथा उस नन्ही गायिका को वहीं बुलवा लिया।

प्राचार्या कमलेश चौहान ने बताया कि यह बच्ची साक्षी सैनी पिछले दिनों गुरुग्राम में आयोजित राज्य स्तरीय टूर्नामेंट व सांस्कृतिक कार्यक्रम में एकल गायन प्रतियोगिता में राज्य में प्रथम स्थान पर रही। इसका चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए हुआ है। ये विद्यालय के लिये, इनके माँ-बाप के लिए गर्व व गौरव की बात है। इसके संगीत अध्यापक रजनीश कुमार ने बताया कि इतनी छोटी उम्र में इतने सधे हुए सुर में गाना हर किसी गायक के वश की बात नहीं। ऐसे उदाहरण बहुत ही कम देखने को मिलते हैं। ये सब हमारी थोड़ी मेहनत, बच्ची की लगन, आत्मविश्वास का कमाल है और इससे बढ़कर ऊपर वाले का आशीर्वाद है। साक्षी सैनी के पिता सलिन्द्र सैनी पेशे से पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट में एडवोकेट हैं तथा माता रीटा सैनी गृहिणी है।

पिता सलिन्द्र सैनी ने बताया कि साक्षी 3-4 वर्षों से गा रही है। ये कीर्तनों में भी गाती रहती हैं। जब ये कीर्तन में गीत गाती हैं तो लोगों को विश्वास नहीं होता कि कोई इतनी छोटी गायिका गीत गा रही है। उन्होंने बताया कि साक्षी बिटिया की ये विशेषता है कि ये हर तरह का गीत मजे से गा लेती है तथा हिन्दी, हरियाणवी या पंजाबी गीत चाव से गाती है। विद्यालय के कला प्राध्यापक भीम सिंह ने जानकारी दी कि साक्षी गायन के साथ-साथ पढ़ाई में कक्षा में अव्वल रहती है। ये हर चीज को ध्यान से देखती है, समझती है और जब ये गाती है तो उस गीत में किसी साधक की तरह खो जाती है। इसकी आवाज इतनी आकर्षक है कि सुनने वाला भी इसके गीत में खो जाता है। इसके बोल सीधे हृदय को छूते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि ये जो गाती है उसका सीधा असर श्रोताओं पर पड़ता है। ज्यादातर या तो ये भजन गाती है या फिर समाज सुधार का कोई गीत या बेटी के उत्थान के लिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आगे चलकर ये बच्ची अपनी प्रभावशाली जादुई आवाज से बड़ी गायिका बन सकती है। समाज में नया परिवर्तन लाने के लिए अपनी अहं भूमिका निभा सकती है। बड़ी गायिका बनने के वही लक्षण होते हैं जो इस नन्हीं कलाकार साक्षी सैनी के इस उम्र में हैं।

- डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद

पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहे शिक्षण

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-शिक्षण हेतु सरल व रोचक पठन सामग्री का विद्यालयों में होना आज समय की माँग हो गई है। इस दिशा में काफी अच्छा कार्य कर रहे हैं प्राध्यापक डॉ.विजय कुमार चावला

प्राथमिक स्तर पर कक्षा-कक्ष में बच्चों को हिन्दी भाषा पढ़ना सीखने-सिखाने की रणनीतियों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री की आवश्यकता पर राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क में कार्यरत हिन्दी प्राध्यापक डॉ विजय कुमार चावला ने कहा कि कक्षा-कक्ष में केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित रहना और किसी भी अन्य प्रकार की पठन सामग्री का उपयोग न करने से शिक्षण बोझिल और उबाऊ बन जाता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया को आनंदमय बनाने के लिए आज विद्यालय के कक्षा-कक्ष में सरल पठन सामग्री का होना अति अनिवार्य है। ऐसी सामग्री, जिसमें चित्र वाली कहानियाँ, जानकारी परक कार्ड, पोस्टर, कविता चार्ट और बड़ी किताबें शामिल हों । कक्षा-कक्ष में ऐसी कहानी की किताबें, जिनमें केवल चित्र हों शब्द न हों, होनी चाहिए । इस तरह की पुस्तकें बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए बहुत बढ़िया रहती हैं। साथ ही इस तरह की किताबों से बच्चों को कहानी में क्रम का भी पता चलता है। इसके बाद उन्होंने डिकोडिंग योग्य पाठ अर्थात् डिकोडेबल टैस्ट के बारे में बताया कि इन पाठों का उपयोग बच्चों को उन चिह्नों का अभ्यास करवाने के लिए किया जाता है जो वे सीख रहे हैं या सीख चुके हैं। इन पाठों के अधिकतर शब्द वर्ण और मात्राओं से मिलकर बनाए जाते हैं, जिन्हें बच्चे बहुत पहले सीख चुके हैं। इन पाठों को पढ़ने से डिकोडिंग कौशल को और मजबूत बनाने में मदद मिलती है। बड़ी किताबों और बिग बुक्स के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह ऐसी किताब होती है जो आकार में बड़ी हो और जिसमें शब्द और चित्र दोनों ही बड़े होते हैं। यह बड़ी किताब 10 से 12 पन्नों की होनी चाहिए और आकर्षक होनी चाहिए। ये किताबें बच्चों के लिए साझा पठन, संवाद सहित पढ़कर सुनाना जैसी रणनीतियों के लिए काम में ली जाती हैं। इन किताबों के बड़े-बड़े चित्र बच्चों को कहानी से पहले अनुमान लगाने में सहायक होते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने एलएएफ का आभार प्रकट करते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र दो दिवसीय कार्यशाला में उन्हें कविता चार्ट और बिग बुक देखने को मिली, जिसके माध्यम से वे प्रेरित हुए और उन्होंने अपने विद्यालय में कक्षा नौवीं की छात्राओं की सहायता से चिड़िया का मोती तथा पूसी और निक्कू दो बड़ी किताबें तैयार कीं और उनके माध्यम से बच्चों के साथ साझा पठन की रणनीति का प्रयोग भी किया। बच्चों ने कवर पेज, बड़े चित्र को देखा और उन्हें ये किताबें बड़ी पसंद आईं। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा-शिक्षण हेतु प्राथमिक शिक्षकों के पाँच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में उन्होंने शिक्षकों से सरल व रोचक पठन सामग्री का निर्माण भी करवाया। उन्होंने विद्यालय में हाल ही में आयोजित जीवन कौशल विकास फन कैंप में छात्राओं के माध्यम से सरल पठन सामग्री तैयार करवाई। छात्राओं ने कविता चार्ट, छोटी कहानियों के चार्ट, बड़ी किताब, डिकोडेबल पाठ आदि तैयार किए और उनकी प्रदर्शनी भी लगाई, जिन्हें माता-पिता, एसएमसी के सदस्यों ने खूब सराहा।

-डॉ प्रदीप राठौर

खेलों के दम पर बदल दी स्कूल की तस्वीर

आज के समय में हर माता पिता का सपना है कि उसके बच्चों का सर्वांगीण विकास हो। इसलिए हर अभिभावक अपने बच्चों को ऐसे स्कूल में दाखिला दिलवाने का प्रयत्न करता है जहाँ पर उसके बच्चों को वे सारी सुविधाएँ मिल सकें जो एक बच्चे के सही विकास के लिए आवश्यक हैं। इसके लिए माता-पिता बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में दाखिला करवाते हैं ताकि बच्चे का सर्वांगीण विकास हो सके। उसे पढाई के साथ अन्य सहभागी क्रियाओं जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि में भाग लेने का मौका मिल सके। प्राइवेट स्कूल इन सब की एवज में अभिभावकों से मोटी रकम फीस के रूप में वसूल लेते हैं। प्राइवेट स्कूलों में आमतौर पर देखने में आया है कि हर एक सहभागी क्रिया में भाग लेने के नाम पर अलग से फीस वसूल की जाती है। लेकिन दिखावा अधिक होने के कारण तथा बच्चे का सही विकास करने के चक्कर में अभिभावक ज्यादातर प्राइवेट स्कूलों की तरफ रुख करने लगे हैं तथा उनका सरकारी स्कूलों से धीरे-धीरे मोह भंग होने लगा है। आमतौर पर देखने में आता है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को सरकारी स्कूलों में पर्याप्त सुविधाओं की कमी का हवाला देकर हम उन सुविधाओं से वंचित कर देते हैं जो एक बच्चे के उचित विकास के लिए जरूरी हैं। बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ साथ खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों में बच्चों की भागीदारी जरूरी है।

परन्तु यदि मन में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो सुविधाओं की कमी आड़े नहीं आती। यदि हमारे मन में कुछ करने की लगन है तो हम कोई भी काम आसानी से कर सकते हैं। इस का जीता-जागता उदारण है जिला फतेहाबाद का रावमा विद्यालय चन्दड़ कलाँ। यहाँ पढ़ने वाले बच्चों को शिक्षा के साथ साथ वो सभी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं जो एक बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए जरूरी हैं। जो सुविधाएँ अच्छे से अच्छा प्राइवेट स्कूल मोटी-मोटी फीस लेकर नहीं दे पाता उन सभी सहभागी क्रियाओं में भाग लेने का मौका यहाँ के विद्यार्थियों को दिया जाता है ताकि बच्चों का उचित विकास हो सके। स्कूल डीडीओ श्री बलदेव सिंह बताते हैं कि हमारे स्कूल में सभी बच्चों को हर सहभागी क्रियाओं में भाग लेने का मौका दिया जाता है चाहे वह खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद या अन्य कार्यक्रम हो। उन्होंने बताया कि वर्ष

के शुरू में ही सारे स्कूल के बच्चों को अलग-अलग सदन में विभाजित कर दिया जाता है तथा साथ ही साथ स्टाफ के सदस्य को अलग-अलग सदनों के इंचार्ज बना दिए जाते हैं फिर पूरे वर्ष भर अलग-अलग गतिविधियों, अंतर सदन प्रतियोगिता करवाई जाती है। यहाँ पर शिक्षा के साथ साथ विशेष रूप से खेलों पर ध्यान दिया जाता है। सत्र के शुरू होते ही पूरे साल का खेल गतिविधि कैलेंडर तैयार कर लिया जाता है तथा पूरे वर्ष हर महीने किसी एक का अंतर सदन मुकाबला करवाया जाता है। इन मुकाबलों के लिए हर एक सदन की कक्षा 6 से 8 व 9 से 12 की लड़के व लड़कियों की टीमें बनाई जाती हैं तथा उनके आपस में अन्तर सदन मुकाबले करवाए जाते हैं और विजेता टीम को बाकायदा पुरस्कार व ट्रॉफी देकर सम्मानित किया जाता है। स्कूल के प्राचार्य श्री बलदेव सिंह ने बताया कि इन सब का श्रेय पूरे स्टाफ को तथा विशेष तौर पर स्कूल के डीपीई डॉ.बलबीर सिंह भारी को जाता है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2013 से पहले हमारा स्कूल खेलों में काफी पिछड़ा हुआ था। 2013 में यहाँ डॉ. बलबीर सिंह भारी ने डी.पी.ई.के पद पर कार्यग्रहण किया। इसके बाद पिछले पाँच वर्षों से खेल क्षेत्र में स्कूल ने न केवल राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्र स्तर पर भी टीम विजेता बन कर अपनी अलग पहचान बनाई है।

स्कूल के डीपीई डॉ. बलबीर सिंह भारी ने बताया कि इन अंतर सदन मुकाबलों को करवाने के लिए हमें सुविधाओं कोई कमी आड़े नहीं आती। इसके लिए हम ग्राम पंचायत, एसएम्सी, शिक्षा विभाग के अधिकारियों तथा समाज सेवी संस्थाओं की मदद लेते हैं तथा इन खेलों में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को पुरस्कार आदि देने की व्यवस्था करते हैं। उन्होंने बताया कि पिछले पाँच सालों से हम वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता करवाते आ रहे हैं जिसमें स्कूल के सभी बच्चे अपने अपने सदनों की टीमों में शामिल होकर इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं तथा सभी विजेताओं व श्रेष्ठ खिलाड़ियों को पुरस्कार दिया जाता है । आज इसी का परिणाम है कि हमारे स्कूल की टीम लगातार 3 वर्षों से खो-खो, हैंडबॉल, बॉक्सिंग आदि खेलों पर राज्य तथा राष्ट्र स्तर पर विजेता रह चुकी है। इन प्रतियोगिताओं से उत्साहित होकर स्कूल के लगभग 100 से 125 खिलाड़ी (लड़के व लड़कियाँ) सुबह-शाम अभ्यास करने आते हैं। उन्होंने बताया कि इस तरह के खेल आयोजन से बहुत-सी छुपी हुई प्रतिभाएँ सामने आई हैं जो पहले खेलों में भाग लेने से हिचकिचा रही थीं। पिछले 3 वर्षों से स्कूल की 3-3 टीम राज्य स्तर पर विजेता बनी है। सत्र 2017-18 तो खेलों के क्षेत्र में और भी स्वर्णिम रहा। इस वर्ष स्कूल की 6 टीमें जिला स्तर पर स्कूल खेलों में प्रथम रही, जिनमें 3 टीमें स्कूल खेलों में राज्य स्तर पर विजेता रहीं तथा खो-खो 19 वर्षीय लड़को की टीम राज्य स्तर पर प्रथम रह कर राष्ट्र स्तर पर दूसरे स्थान पर रही। हरियाणा टीम के 12 में से 5 खिलाड़ी इसी स्कूल के थे। इसके अलावा हरियाणा स्वर्ण जयंती खेल महाकुंभ में इस स्कूल की लड़के व लड़कियों की 6 टीमें जिला स्तर पर प्रथम रहीं, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। और इन सब की सफलताओं का सबसे बड़ा कारण स्कूल में आयोजित अंतर सदन मुकाबले हैं, जिनके कारण हर खिलाड़ी को किसी न किसी खेल में भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है। स्कूल की खेल क्षेत्र में इन उपलब्धियों के कारण हरियाणा सरकार ने स्वर्ण जयंती खेल नर्सरी के तहत खो-खो खेल की नर्सरी स्कूल को स्वीकृत की है, जिसमें स्कूल के 25 खिलाडियों का चयन किया गया है, जिनको खुराक भत्ते के रूप में 15 वर्ष तक की आयु के खिलाड़ियों को 1500 रुपए प्रति मास तथा इससे ऊपर आयु वर्ग के खिलाड़ियों को 2000 रुपये प्रति मास दिया जायेगा। इसके अलावा यहाँ प्रत्येक खिलाड़ी को हर वर्ष ग्राम पंचायत की तरफ से खेल पोशाक इत्यादि प्रदान करवाई जाती है।

पाशा राम
हिंदी अध्यापक
रावमा विद्यालय चंदडकलाँ, जिला-फतेहाबाद

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो,

आपने देखा होगा कि जब मोमबत्ती जलती है तो उसका मोम पिघल कर नीचे गिरने लगता है । क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है, अगर नहीं तो आइये में आपको बताती हूँ - मोमबत्ती जब जलती है तो मोम पिघल कर बहने क्यों लगता है?

जब मोमबत्ती को जलाया जाता है तो ऊष्मा पाकर मोम के अणु दूर-दूर हो जाते हैं, क्योंकि उष्मा अणुओं के मध्य लगने वाले आकर्षण बल को कमजोर कर देता है जिससे अणु गति करने के लिये स्वतन्त्र हो जाते हैं तथा वह द्रव अवस्था में आ जाते हैं। इसी कारण मोमबत्ती का मोम पिघलने लगता है ।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न 1. भारत का राष्ट्रीय पुष्प क्या है?
उत्तर : कमल
प्रश्न 2. शिक्षक-दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर : 5 सितम्बर
प्रश्न 3. जापान पर परमाणु बम कब गिराया गया?
उत्तर : सन 1945 में
प्रश्न 4. पहला विश्वयुद्ध कब लड़ा गया?
उत्तर : 1914-1918 ई.
प्रश्न 5. भारत के राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' के रचयिता कौन हैं?
उत्तरः श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर
प्रश्न 6. महाभारत के रचयिता कौन हैं?
उत्तर : श्री वेदव्यास
प्रश्न 7. किन दो स्थानों के बीच हिमसागर एक्सप्रेस चलती है?
उत्तर : जम्मू से कन्याकुमारी
प्रश्न 8. जनरल किस सेना का एक अधिकारी पद है?
उत्तर : थल सेना का
प्रश्न 9. किस राज्य में पवित्र तीर्थस्थल अमरनाथ स्थित है?
उत्तर : जम्मू एवं कश्मीर में
प्रश्न 10. पर्यटन-स्थल गुलमर्ग कहाँ स्थित है?
उत्तर : कश्मीर में

पहेलियाँ

1.चीज़ों से प्रकाश चारों ही, दिशा फैलता जिससे।
घटना क्या है होते हम सब, लाभान्वित हैं इससे।।
2.थोड़ी मात्रा में प्रकाश को, अपने में जाने दे।
क्या है नाम बताओ फौरन, क्यों कोई ताने दे।।
3.वह सतह क्या होती बोलो, बने जहाँ प्रतिबिम्ब ।
बुद्धिमान कहलाओ जग में, हो कोई भी लिंग।।
4.किसी भवन अथवा पहाड़ से, ध्वनि का हो परावर्तन।
बोलो क्या होती वह घटना, सफल बनाए जीवन।।
5.ऐसी भी ध्वनि होती, बुरा असर कानों पर डाले।
उसको लेकर नाम पुकारें, क्या ये दुनिया वाले।।
6.जो वस्तुएँ करे हैं कंपन, जाएँ इधर-उधर।
कहते ऐसे कंपनों को क्या, देना तो उत्तर।।
7.चिमटे जैसा यंत्र अनोखा, डबल भुजाओं वाला।
बनी स्टील की काया इसकी, करता नाम निराला।।
8.डोरी वाला वाद्य-यंत्र यह, इसका नाम बताओ।
तुम संगीत इसी के कारण, मधुर-मधुर सुन पाओ।।
9.वाक्-तंतुओं से ध्वनि पैदा, करते हैं कुछ एक।
एक जानवर कहो कौन-सा, डर जिससे अतिरेक।।
10.कौन स्रोत मानव में ध्वनि का, तुम दिमाग से जूझो।
देखें पहले कौन बताए, बूझो-बूझो-बूझो।।

उत्तर :- 1.प्रकीर्णन 2.पारभासी 3.परदा 4.प्रतिध्वनि 5.शोर 6.दोलन 7.स्वरित्र द्विभुज 8.सितार 9.शेर 10.कंठ।

- डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

सफेद हुआ कौआ

कौआ सारा दिन किसान की छत पर बैठकर 'काँव-काँव' करता रहता था, परंतु किसान उसे कुछ भी खाने के लिए नहीं देता था। वह उसे बुरा-भला कहते हुए उड़ा देता था।

उसी किसान ने एक कबूतर पाल रखा था, जिसे वह बहुत प्यार करता था। कौए को समझ नहीं आती थी कि किसान कबूतर से प्यार और उसके साथ दुर्व्यवहार क्यों करता है।

कौए ने सोचा कि किसान शायद उसके काले रंग से नफरत करता है। उसने कबूतर की तरह सफेद होने का फैसला कर लिया।

गोरा होने के लिए वह कई दिनों तक खूब नहाया, लेकिन रंग अब भी काला ही बना रहा। सफेद होने का कोई और उपाय सोचते हुए वह शहर चला आया। यहाँ उसने एक चित्रकार को देखा जिसके पास अलग-अलग रंग थे। कौए ने चित्रकार से प्रार्थना की कि वह उसके पंखों को सफेद रंग से रंग दे।

चित्रकार ने कहा-'कौए भाई! मैं तुम्हारे पंखों को सफेद तो कर दूंगा लेकिन रंगों में घुले रसायनों से तुम्हें काफी परेशानी हो सकती है। तुम्हें उड़ान भरने में भी दिक्कत हो सकती है।' लेकिन कौआ कुछ सुनने को तैयार नहीं था। हारकर चित्रकार ने कौए के पंखों को रंग लगाकर सफेद कर दिया।

चित्रकार ने जो कहा था, वैसा ही हुआ। सफेद कबूतर जैसा बनने के बाद कौए के छोटे-छोटे सभी पंख आपस में जुड़ गये थे। उसे उड़ने में मुश्किल होने लगी थी। अब कौआ लम्बी उड़ान नहीं भर सकता था। रंगों के रसायन के कारण कौए को गर्मी भी अधिक लगने लगी थी।

इन मुश्किलों के बाद भी कौआ खुश था। वह खुशी-खुशी किसान के घर की मुंडेर पर जा बैठा।

उसे देखते ही किसान बोला 'बेवकूफ कौए, पहले तो मुझे तेरी बोली और चालाकी भरी आदतें ही बुरी लगती थी, अब तेरी शक्ल-सूरत भी बुरी लगने लगी है।' कहकर किसान उसे पत्थर से मारने के लिए दौड़ा। कौए ने फटाफट उड़ान भरकर जान बचाई।

अब कौआ समझ गया था कि सफेद बनकर उसने बेकार में अपनी चमड़ी और पंख खराब कर लिए हैं। अब कौआ अपने शरीर से रंग उतारने का कोई ढंग सोचने लग गया था।

शिक्षा- किसी दूसरे से स्नेह पाने के लिए सुंदर बनने और दिखावे की जरूरत नहीं है। सिर्फ अपनी बोली में रस घोलने और गंदी आदतों को त्यागने की जरूरत है।

इकबाल सिंह
पंजाबी अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
जाखन दादी
जिला- फतेहाबाद

पहाड़ा गीत

दो एकम दो
सब मिल हँसो।
दो दूनी चार
बाँटो सबको प्यार।
दो तिया छह
साथ-साथ रह।
दो चौके आठ
याद करो पाठ।
दो पंजे दस
स्कूल चली बस।
दो छक्के बारह
चमको जैसे तारा।
दो सत्ते चौदह
रोपो एक पौधा।
दो अट्ठे सोलह
खाओ पूड़ी-छोला।
दो नवम अठारह
खेल लो दोबारा।
दो दहम बीस
जमा करो फीस।

डॉ.फहीम अहमद
485/301, जेलर्स बिल्डिंग, बब्बू वाली गली,
लकड़मंडी, डालीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)

कागज़ की कहानी

प्राचीन काल में लिखने के लिए ताड़पत्रों का प्रयोग किया जाता था। इसके साथ-साथ ताम्रपत्र, शिलालेखों, तथा लकड़ी पर भी लिखा जाता रहा है । जिससे उन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सके। इतिहासकारों के अनुसार सबसे पहले कागज़ का आविष्कार चीन में हुआ। 202 ई.पू. हान राजवंश के समय चीन के निवासी त्साई-लुन ने कागज़ का आविष्कार किया। इस आविष्कार से पहले बाँस पर और रेशम के कपड़े पर लिखा जाता था । रेशम बहुत महँगा था और बाँस बहुत भारी इसलिए त्साई-लुन के मन में आया कि कुछ ऐसा बनाया जाए तो हल्का और सस्ता हो। तब उसने भांग, शहतूत के पत्ते, पेड़ की छाल तथा अन्य तरह के रेशों से कागज़ का निर्माण किया । उसके बाद कागज़ का इस्तेमाल सम्पूर्ण विश्व में होने लगा। इस अनोखे आविष्कार के लिए त्साई-लुन को कागज़ का संत कहा जाने लगा। चीन के बाद सिन्धु सभ्यता के दौरान भारत में सबसे पहले कागज़ का निर्माण और प्रयोग हुआ । आगे चलकर भारत में कागज़ बनाने का पहला कारखाना काश्मीर में सुलतान जैनुल आबिदीन (1417-1467 ई.) ने लगवाया। आधुनिक तकनीक पर आधारित कागज़ का सबसे पहला कारखाना हुगली नदी के तट पर 1870 में कलकत्ता के निकट 'बाली' नामक स्थान पर लगाया गया । इसके बाद टीटागढ़(1882), बंगाल(1887), जगाधरी(1925), गुजरात(1933) आदि प्रदेशों में कागज़ बनाने के कारखाने लगाए गए। कुछ इतिहासकारों का मत है कि कागज़ का पहला प्रयोग मिस्र में हुआ। पेपिरस एंटीकोरियम नामक घास द्वारा कागज़ बनाया गया जिसे पेपिरस या पेपिरी कहा जाता था।

कागज़ मानव जीवन में बहुत महत्त्व रखता है। आरम्भ में यह कागज हाथ से बनाया जाता था। बाद में कागज़ बनाने के लिए मशीनों का प्रयोग किया जाने लगा। आधुनिक समय में कागज बनाने की कई विधियाँ प्रचलित हैं। कागज़ कई प्रकार का होता है- जैसे बैंक कागज़, बॉण्ड कागज़, बुक कागज़, चीनी कागज़, फोटो कागज़, इंकजेट कागज़, सूत कागज़, क्राफ्ट कागज़, ड्राइंग कागज़, वैक्स कागज़, वाल कागज़ आदि हैं। कागज़ से विभिन्न प्रकार की उपयोगी वस्तुएँ जैसे किताबें, कापियाँ, कैलेंडर, बैग, पतंग, डायरी आदि बनाए जाते हैं।

आज कागज का निर्माण मुख्यतः घास, बाँस, लकड़ी, पुराने कपड़ों, गन्ने की खोई से हो रहा हैं। कागज़ निर्माण में सेल्यूलोस बड़ी भूमिका निभाता है। सेल्यूलोस एक विशेष प्रकार का रेशा है। सेल्यूलोस एक कार्बनिक यौगिक है। यह तीन प्रकार का होता है- अल्फ़ा सेल्यूलोस, बीटा सेल्यूलोस, गामा सेल्यूलोस। रुई में 99 प्रतिशत अल्फ़ा सेल्यूलोस होता है। पौधों में सेल्यूलोस नाम का कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है जिससे पौधों की कोशिकाएँ बनती हैं। यह पेड़ के तने में पाया जाता है जिस पौधे में सेल्यूलोस की मात्रा अच्छी होगी उससे उतना ही अच्छा कागज बनेगा। कपास भी सेल्यूलोस हैं। किन्तु महँगी होने के कारण कागज़ निर्माण में इसका इस्तेमाल नहीं होता। इसलिए कपास का प्रयोग कपड़ा बनाने में किया जाता है। पौधों में सेल्यूलोस के साथ-साथ लिग्निन और पेक्टिन, खनिज लवण, वसा, गोंद, प्रोटीन, आदि भी पाया जाता है इसलिए वृक्ष के तने से सबसे अच्छा कागज़ बनता है। मुख्यतः बाँस, देवदार, भोज, पपलर, फ़र, सफेदा आदि वृक्षों के तने से कागज़ बनता है। सबसे पहले वृक्ष के तने से छाल साफ़ कर ली जाती है। उसके बाद उसे चिप्पर मशीन द्वारा 3 सेंटीमीटर से 5.5 सेंटीमीटर के आकार में बारीक काट लिया जाता है। इसके बाद इन टुकड़ों को डाइजेस्टर में डालकर दिया जाता है तथा व्हाइट लिकर रसायन डालकर पकाया जाता है। अब डाइजेस्टर में यह टुकड़े लुगदी (पल्प) में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके बाद इस लुगदी की क्लोरीन या ऑक्सीजन द्वारा सफाई (ब्लीचिंग)की जाती है। इस प्रक्रिया को ब्लीचिंग और क्लीनिंग कहते हैं। फिर इस लुगदी को स्टॉक सैक्शन में भेज दिया जाता है, जहाँ इसकी कुटाई (बीटिंग) और सफाई (रिफाइनिंग) की जाती है। इस के बाद इस लुगदी में कागज़ के अनुसार रंग(डाई), पिग्मेंट मिलाया जाता है। फिर इस लुदगी की सेंटी क्लीनर्स मशीन में सफाई करके, मशीन चेस्ट सेक्सन में भेज दिया जाता है। मशीन चेस्ट से इसे फैन पंप के माध्यम से पेपर मशीन के हैड बॉक्स में भेज दिया जाता है, जहाँ पर इसकी सघनता एक प्रतिशत से भी कम रखी जाती है। फिर यह वायर पर जाता है जहाँ इसका पानी अलग हो जाता है और पेपर की शीट बन जाती है। यह पेपर शीट जो प्रैस सैक्शन में चली जाती है, फिर ड्रायर से गुजरने के बाद यह सूख जाती हैं तब यह कागज़ कलेंडर, सुपर कलेंडर से होकर पॉप रील पर इकट्ठा हो जाता है फिर रिवाइडर और कटर से गुजर कर यह फिनिशिंग सैक्शन में जाता है।इस प्रकार अनेक प्रक्रियाओं से गुजरकर यह कागज़ हम तक पहुँच जाता है।

सुनीता काम्बोज
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी प्रौद्योगिकी संस्थान
लौंगोवाल, जिला-संगरूर (पंजाब)

विद्यालय

आप इस प्रवेश फॉर्म में लिखे सभी नियमों को अच्छे से पढ़ लीजिए। इनसे सहमत हो तभी आपके बच्चे का प्रवेश यहाँ हो सकता है- विद्यालय की प्रधानाचार्या ने छठवीं कक्षा में बच्चे के प्रवेश के लिए आए हुए अखिल और नेहा को प्रवेश फ़ॉर्म देते हुए कहा।

ऊपर के नाम-पते से संबंधित पूर्ति कर नेहा की दृष्टि पहले नियम पर टिक गयी।

आप अपने बच्चे को क्या बनाना चाहते हैं? -फुसफुसाते हुए नेहा ने पढ़ा और प्रधानाचार्या की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

-मैडम, क्या यह भी लिखना होगा? अभी तो वह सिर्फ छठवीं कक्षा में है। नेहा ने पूछा।

-जी! प्रधानाचार्या ने संक्षिप्त जवाब दिया।

नेहा ने अखिल की ओर देखा और लिखा, डॉक्टर।

यदि भविष्य में पाया गया कि विद्यार्थी की रुचि आपकी रुचि से नहीं मिलती तो विद्यालय को यह अधिकार होगा कि वह विद्यार्थी को उसकी पसंद के विषय में आगे बढ़ाए। क्या आपको यह स्वीकार है? -अगले नियम को बुदबुदाते हुए पढ़ा नेहा ने।

अब यह क्या है? अखिल! हमें नहीं कराना यहाँ अपने बेटे का प्रवेश। आखिर ये कौन होते हैं उसके भविष्य का फैसला लेने वाले? -उसने तुनककर अखिल से कहा।

-मैडम, आप हमें इसका मतलब समझाएँगी। अखिल ने थोड़ा गुस्से में आते हुए कहा।

-जी सर, आप थोड़ा शांति से बैठिए। प्रधानाचार्या ने पानी का गिलास अखिल की ओर सरकाते हुए कहा।

-आज के दौर में बच्चे माता-पिता की इच्छाओं को पूरा करने के दबाब में जहाँ आत्महत्या की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, उसे रोकने का यह हमारा छोटा सा प्रयास है। बाकी आप यह पढ़िए। कहते हुए प्रधानाचार्या ने एक अखबार अखिल की ओर बढ़ा दिया जिसमें उस वर्ष आत्महत्या करने वाले विद्यार्थियों के आँकड़े थे।

-सॉरी मैडम! मुझे अब समझ आया कि यह विद्यालय इस शहर का सबसे अच्छा विद्यालय क्यों है? अखिल ने प्रधानाचार्या से कहा और नेहा को फ़ॉर्म भरने का इशारा किया।

नेहा ने दूसरे नियम वाले कॉलम के जवाब में हाँ लिखा व फ़ॉर्म की बाकी की प्रविष्टियों की पूर्ति की और कुर्सी छोड़ते हुए अखबार की न्यूज देखते हुए प्रधानाचार्या से कहा- मैडम! यदि सभी विद्यालय आप के विद्यालय जैसे हों तो हमारा ही क्या देश का कोई भी बच्चा किसी भी अखबार की इस न्यूज का हिस्सा नहीं होगा। शुक्रिया आपका।

अजय गोयल

2019

फरवरी माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 फरवरी -	सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला
4 फरवरी-	विश्व कैंसर दिवस
10 फरवरी-	सर छोटू राम जयंती
13 फरवरी-	विश्व रेडियो दिवस
14 फरवरी-	वेलेंटाइन डे
18 फरवरी-	ताज महोत्सव
19 फरवरी -	गुरु रविदास जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती
20 फरवरी-	विश्व सामाजिक न्याय दिवस
21 फरवरी-	अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
28 फरवरी -	महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Saksham Ghoshna The Mega Round

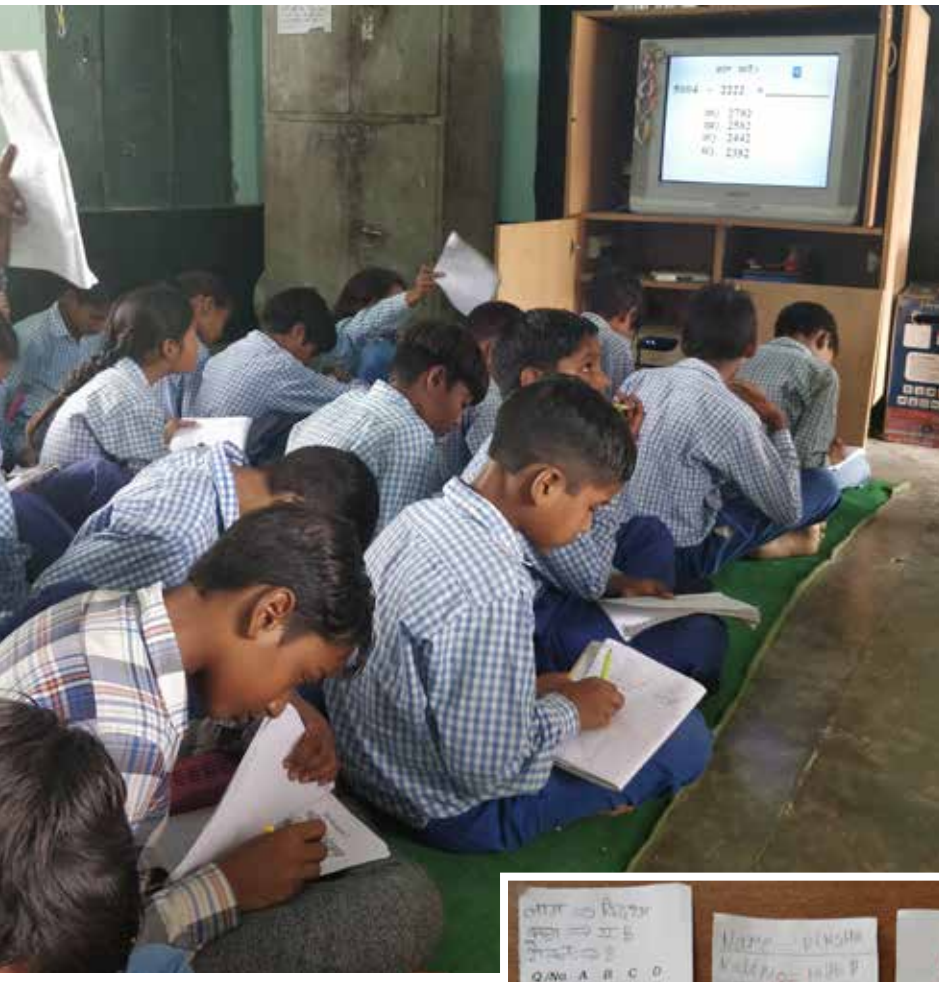

Saksham Ghoshna is an attempt to generate momentum and unify district teams towards an ambitious goal of achieving grade level competency. Under this, a third party assessment is conducted on a sampling basis of classes third, fifth and seventh in subjects Hindi and Maths. Whenever a district team is confident that one or more of its blocks are prepared for the assessment, they nominate it for the same. The nomination follows a rigorous process of preparation and monitoring which unifies all officers - District Commissioners (DC), Sub-Divisional Magistrates (SDM), District Education Officers (DEO) or Block Resource Persons. The target is that 80% students being assessed should achieve grade level competency. The assessment is conducted by a renowned third party - Gray Matters India (GMI) in approximately one-third of the schools of the nominated block. GMI uses data analytical tools to check cheating and other malpractices by analysing results at class, subject and school level. This independent yet data driven mechanism ensures that the Ghoshna remains a fair and credible process.

To make Haryana Saksham, it is important to implement initiatives that are target oriented. After visiting districts and assessing the best practices and innovations undertaken on the ground, the Saksham Haryana Cell launched "District Initiatives". These were a product of the district momentum and motivation. By codifying it, other districts have also been able to replicate the same.

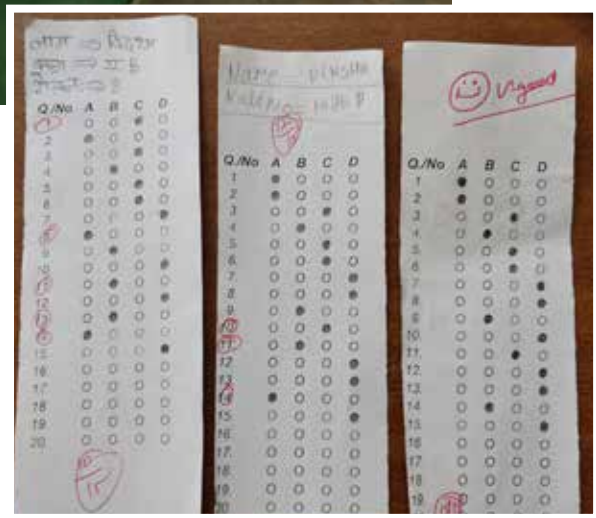

Saksham Register:

Saksham Register is a student wise competency record. Mahendergarh district coined the slogan "Saksham-Shikshak, Antim Baccha" which aimed at ensuring that no child is left behind. Even the last child or "antim baccha" who is the farthest from his/her grade level competency needs to be supported in order to become Saksham. A Saksham register is a notebook where every teacher will maintain competencies of students and weekly update the same. Unlike the Skill passbook which is only filled twice in a academic

year, the Saksham Register provides a weekly opportunity for the teacher to map competencies. The Saksham Register is also different from the Moolyankan Soochi, as that is targeted only for the remedial content syllabus. Many of the districts have undertaken this practice – such as Sonipat, Jhajjar, Charkhi Dadri, Yamunanagar and Panchkula etc. A critical feature of the Saksham Register is to capture the L0, L1, L2 students using tools like Moolyankan Soochi and Skill passbook.

Saksham Abhiyaas:

After a student has been taught a competency, he/she requires rigorous practice in order to master the same. For example, if a student has been taught how to "divide three digit numbers by a single digit number", he then requires adequate practice in order to be able to apply the learning. The GMI assessment pattern consists of multiple choice questions which test the mastery of competency through various types of questions. The Saksham Abhiyaas initiative ensures that regular assessment of different types of questions is conducted through pictorials and graphs etc. This helps strengthen a student's understanding of the competency. A critical feature of this is to mobilize the subject experts from DIET and BRPs to create a repository of question papers for this.

Saksham Lakshya:

Saksham Lakshya is a district wide assessment for assessing the learning level of the students in the district. The initiative is critical as it allows the districts to analyze the data and assess the actual levels of learning of students. This exercise is not to be conducted frequently, as analyzing the data and synthesizing it is a time consuming task. However, districts that have undergone at least 2 Saksham Lakshaya assessments are better placed to design and execute their strategy on the

ground. This initiative is now being implemented by almost all districts, some of which are Charkhi Dadri, Panipat, Nuh, Kurukshetra and Hisar etc.

Saksham PTM:

Saksham PTM is a district wide mega PTM wherein a PTM will be conducted for the whole block on one day for classes 1st to 8th. The initiative is aimed at increasing parent-student engagement. A recommended procedure for the same has also been shared which can be used a guideline to ensure that the same is conducted effectively across the block. The guidelines are critical as it also encourages calls to be made to parents, letter by the DC/ADC to parents encouraging them to attend parent teacher conference. In order to ensure that the same is done in an effective manner, the BRPs and ABRCs also visit the schools during the day and fill a google sheet to record the data on attendance of parents and feedback from parents. Numerous districts have been following this such as Kaithal, Gurugram and Fatehabad.

As of December 2018, six rounds of Saksham Ghoshna were conducted. In the same month, a Saksham Mega round was also announced. The Mega round is scheduled for 12th February 2019, in which remaining 93 blocks would go into assessment. Since then, many activities have been undertaken to prepare the blocks for the Mega round. To start off, two DEO workshops were held in Sonipat and Ambala. The workshop was headed by the Director General of Secondary Education, Rakesh Gupta along with other members of the Education Department – Balkishan Yadav from HSSPP, Surinder Sindhu from SCERT and Kalpana Sharma from HSSPP. Current issues faced by the districts, strategy for upcoming weeks and best practices were shared during this meeting.

Following this, each district has also been allotted nodal persons from the Education department who have conducted visits and worked on increasing the on ground momentum. Each district also submitted block level plans for the blocks that are not Saksham yet. In the weeks preceding the Saksham Mega round, numerous pre-assessments or Saksham Lakshya was also conducted. For this the funding and centralized question papers were provided to the districts. The pre-assessment results so far have been promising which has been a result of the hard work of the districts officers.

In many districts a thorough analysis of the GMI report was also conducted, through which weaker competencies for Maths and Hindi were identified. Some districts have also made a list of these weaker competencies of their blocks and are targeting improvement in them. Additionally, centrally a list of weaker competencies was also created and disseminated through Whatsapp groups to all teachers.

The aim of Saksham Ghoshna has been to push the focus from mastering the syllabus to mastering competencies. We hope that through this endeavor we will be able to make Haryana Saksham.

Saksham Haryana Cell

Saksham Kaksha

An android application to simplify the teaching-learning process

Children of today, are the future of tomorrow. By empowering our children with good quality education in schools, we can ensure that they grow up to uphold good character and social values that will be the pillars of our nation. They are potential resources who can contribute a lot to the development of India. Considering this, governments at different levels have been investing substantial resources in education. For decades after independence, India has invested a substantial amount of financial and physical resources in education. Unfortunately, despite all the efforts and resources being channelized in this sector, the desired outcomes are still beyond our reach. An all-around effort from various stakeholders - including teachers, administration, parents as well as the community is required for the course correction.

With the advent of smart phones and 3G revolution in India, technology has become a powerful lever to bridge the gap in education. The high smart phone penetration in Haryana can be utilised at the classroom level to equip our teachers and educators with appropriate tools.Recognising this need, the National Informatics Centre (hereinafter NIC) at Kurukshetra, chaired by Mr Vinod Singla has pioneered and rolled-out an android-based application called 'Saksham Kaksha'. The application intends to augment the involvement of parents and community in the academic development of their wards. As well as improve the resources available to teachers inside the classroom. Prior to this, NIC Kurukshetra under Mr Singla's leadership was able to successfully revive the then defunct EDUSAT television sets in more than 600 schools of the entire district of Kurukshetra. The android-based application is yet another effort towards simplifying through digitalisation of the teaching-learning process.

The application contains more than 30,000 multiple choice questions based on the syllabus of different subjects from classes I to XII like English, Hindi, Science, Social Sciences, Geography and Languages. Questions have been mapped to the textbook chapters to ensure alignment between the school syllabus and resources. For instance, in the Hindi textbook for class IV, chap-

ter one is titled "Jaddugar yah kaun". On the app, the same chapter has been mapped to more than thirty five multiple choice questions. The questions assess multiple aspects such as – ability to understand facts, critical thinking, synonyms and vocabulary etc. Similarly, the 15 chapters of the class IV textbook have been mapped with easy to understand questions.In addition to the questions and answers, the 'Saksham Kaksha' application contains chapter wise video links for helping parents and teachers in the teaching-learning process.

One of the district initiatives launched by the Saksham Haryana initiative has been "Saksham Abhyaas", which encourages students to practice questions every day in order to improve their mastery over a competency. However, many times, teachers and parents require question resources to administer this practice. Saksham Kaksha application and its rich resources has given a boost to Saksham Abhyaas. A unique aspect about the app is that it purely came as an innovation from the Kurukshetra district. This signifies the high momentum and motivation in the districts to push students to become grade level competent. It also shows that the district is not re-inventing the wheel, and its efforts are strengthening the current initiatives.

Hon'ble Chief Minister of Haryana Sh. Manohar Lal Khattar's vision is that all the students of our government schools achieve grade-level competency in the foreseeable future. This is important, because we envision not just free education for children but also quality education. The Saksham-Kaksha application is an enabler in the same direction. The significance and utility of the application can be judged by the fact that, within a month of its launch, more than 20,000 teachers, as well as parents from the entire State, have started using it on a daily basis. So much so that government officers and teachers in other districts have also started quoting it, as a sound repository of resources. The app also has a mechanism to take feedback from users in order to ensure that the app continuously improves its user centricity.

We request our readers to access the application from the Google Play Store on your Andriod phone today by typing 'Saksham Kaksha'. The application is free of cost and can be easily downloaded without any issues. The enthusiastic support and encouragement received by the application has boosted the confidence of NIC team at Kurukshetra that will continue its endeavour to use technology in education. This application is a small beginning towards bringing a change in the way teacher, parents and students look at the teaching-learning process both inside and outside the classroom.

In this digital age, NIC Kurukshetra's work reflects the innovation and motivation to improve learning in both inside and outside the classroom. Such efforts will ensure that we improve the quality of education in government schools so that children of today, can become the future leaders of tomorrow.

Saksham Haryana Cell

Learning Enhancement Programme

Need for a remedial programme:

The 13th ASER report released in 2018 throws light on some interesting facts about India's students. The survey is conducted on a one on one assessment basis with each student on basic reading and arithmetic. In India, only 28% of children in class 3 can read a class 2 level text. In class 7, only 50% of the children can do a 3 digit division by a single digit. The overall report throws light on the fact that most children in India's schools are behind their grade level competency. The gap in learning levels is stark and as the student progresses to the next class, the gap keeps widening. The question which then arises is - how do we teach a classroom of children where different groups are at different learning levels? According to an article published in the Chicago Policy Review, educational stagnation requires an extra effort to ensure that children achieve proficiency and growth in the classroom. This makes a strong case of remedial learning inside the classroom.

What is LEP?

Haryana launched the Learning Enhancement Programme (LEP) in all primary school classrooms. From classes 1st to 5th, a remedial programme is executed for Hindi, English and Mathematics. The crux of the programme is to facilitate activity based learning according to the learning levels of students. It also encourages the use of peer learning techniques and grouping to ensure that the teacher is able to give targeted support to students of a similar competency level. Each teacher is provided with an LEP manual. The

manuals differ from traditional teaching-learning material in numerous way. They focus on competencies instead of syllabus and also lay emphasis on continuous assessment as opposed to one time examinations. Additionally, the use of activity based and experiential learning instead of an instructional one size fits all approaches is a unique feature of the manual.

For instance, for class 3, LEP manual for Hindi states activities for students according to L1 and L2 categories. For chapter 2 titled "Hawa aur Paani", there are separate activities that teacher can execute for L1 and L2 children during the same lesson.

Before every Student Assessment Test (SAT) cycle, a teacher conducts a Pre-Assessment. In order to conduct a pre-assessment, a teacher identifies the chapter from the Saksham Taalika and key competencies from the Mulyankan Soochi. A test is conducted and the responses are captured in the Mulyankan Soochi. On the basis of it, students are categorized in L0, L1 and L2. L0 students denote those who are multiple levels behind grade level competency, L1 students denote those who are one level behind grade level competency and L2 students denote those who are at grade level competency.

During the SAT cycle, a teacher identifies the relevant chapter and competencies in the Saksham Taalika. Accordingly, the teacher can access the relevant DIGILEP videos for those competencies from the DIGILEP website and prepare for the classroom. During execution of the lesson, the teacher groups students. L0 students are made to sit in the first row, closer to the teacher, to ensure that they receive special attention from the teacher. The L1 and L2 students sit in mixed groups to encourage peer-learning. After teaching the lesson, the teacher conducts post-assessment in order to see whether students have understood the competencies. If 80% of the students have understood the chapter, the teacher moves on to the next lesson.

Training

The in-person training for LEP has been conducted by SCERT in Gurugram. Two trainings were conducted on the principles of LEP. An online resource for the same was also prepared on the Chalklit App. A sum total of 400 mentors (BRPs/ABRCs) were trained through this. A School LEP owner (SLO) was also appointed at the school level. Furthermore, during November-December, 7,500 primary teachers from 10 districts were trained in the LEP methodology.

Along with the in person training, a digital training via Whatsapp was also planned. This was used as a platform to reiterate the LEP training which was conducted in person. Each block was encouraged to make a DIGILEP Whatsapp group in Haryana. Today,

the primary school teachers from 119 blocks are covered through more than 160 Whatsapp groups. Before, the beginning of each SAT cycle, a short digital training course is run via Whatsapp. The DIGILEP website also contains numerous videos, Saksham Taalika and other information on how to conduct an effective LEP in the classroom.

The videos on the website have been crowd sourced from the teachers of Haryana. We received a more than 1000 videos which were then curated by a team BRPs and ABRCs under the leadership of SCERT. From these about 100 videos were selected that were mapped to competencies. By watching these videos, a teacher can get inspired to use an innovative method to teach that particular competency in the classroom.

Progress so far?

So far, the DIGILEP Youtube channel has received more than 2.25 Lakh views since its launch in 2017. In the recent month of December, the channel has received more than 37,000 views. This depicts the popularity of the channel amidst teachers who use the same in order to improve classroom teaching. The LEP implementation status reflected in the Academic Monitoring System (AMS) reflects that an average of 95% of classrooms in Haryana are executing LEP in the first hour every day with districts like Mahendragarh, Panipat and Gurugram scoring highest on compliance.

Recently, NITI Aayog, also tweeted about LEP, congratulating the Haryana Education Department for focusing on the improving grade level competency. We believe that LEP initiative is a positive step towards changing the discourse on education from syllabus to competencies. Through such an initiative, Haryana can attempt to leave no child behind and get everyone at grade level competency.

Saksham Haryana Cell

Saksham Officer *of the Week*

In August 2018, the Saksham Officer of the Week initiative was launched in Haryana. This initiatives aims to appreciate and encourage hard working and motivated officers across twenty two districts. There are numerous district officers who are making data driven administrative decisions and also encouraging other officers and teachers around them to do the same. The initiative is designed as a means to positively encourage officers without any financial or other incentive. The Deputy Commissioner or the Assistant Deputy Commissioner makes the nomination from his/her district. The initiative is a weekly feature and so far, 25 officers have been declared as Saksham Officer of the Week. The officers who can be nominated for this are – District Education Officer (DEO), District Elementary Education Officer (DEEO), Deputy District Education Officer (DDEO), Block Education Officer (BEO), Block Elementary Education Officer (BEEO), District Project Coordinator (DPC), Assistant Project Coordinator (APC), DIET Principal, DIET Vice Principal and DIET Lecturers.

In the month of January, one officer was declared as Saksham Officer of the Week – Mr. Jaspal Singh who is the Block Education Officer from Nathusari Chopta in Sirsa. His contribution to the district has been his regular monitoring of schools where he has promoted competency based learning. He has also organized internal assessment for the Saksham Ghoshna examination. He further motivated the students by giving awards to high performers.

The distinct feature of Saksham Officers of the Week has been that firstly, the focus has been that the students should not only score marks in exams but also gain proficiency on their grade level competencies. These officers and their work reflects the change in discourse towards a clear focus on grade level competencies. Secondly, there has been a huge emphasis on the use of data while making decisions. The Academic Monitoring System and Student Assessment Dashboard are regularly referred to in order to identify weaker schools and blocks with the district. Lastly, these officers have played a pivotal role in shaping and motivating other officers and teachers towards making students Saksham.

Saksham Haryana Cell

Dr. Himanshu Garg

Leave a good heritage for your children

"We are earning for our children". We hear this statement in our daily routine. All parents are presenting the same statement. We all are struggling to earn heaps of money to keep our children's future safe and secure. We are ready to earn money by hook or by crook. But the money we are earning has the power to make the future secure or our children and provide them with anything else they require for their security. I think they need our time instead of money. Anyone can steal the money we earn for them but nobody can steal the values we develop in our children. So it is our duty to accumulate a good heritage of values in our children.

At the point of death, father Keshav Sen, called his children and he advised them to follow his footsteps so that they can have peace of mind in all that they do. His daughter, Shreya, said,"- Papa, its unfortunate you are dying without a penny in your bank.

Other fathers' that you tag as being corrupt, thieves of public funds left houses and properties for their children. Even this house we live in is a rented apartment. Sorry, I can't emulate you, just go, let's chart our own course. Few moments later, their father's spirit left his body. After some years, Shreya went for an interview in a multinational company.

In the interview the Chairman of the committee asked, "What is your father's name?" He also asked other details about her father. Shreya replied, "I am Shreya Sen. My Dad is no more." The Chairman cut in, "Oh my God, you are Keshav Sen's daughter?" He turned to the other members and said, "This man was the one that signed my membership form and his recommendation brought me where I am today. He did all this for free. I didn't even know his address, he never knew me. He just did it for me." He turned to Shreya, "I have no questions for you, consider yourself as having gotten this job, come tomorrow, your letter will be waiting for you." Shreya Sen became the Corporate Affairs Manager of the company with two chauffer driven cars, a duplex attached to the office, and a salary of Rs.1,00,000 per month excluding allowances and other costs. In an interview, she was asked the secret of her success. With tears, she replied, "My Father paved these ways for me. It was after he died that I knew that he was financially poor but exceedingly rich in integrity, discipline and honesty". She was asked again, why she is weeping. She replied, "At the point of death, I insulted my dad for being an honest man of integrity. I hope he will forgive me in his grave now. I didn't work for all these, he did it for me to just walk in". So, finally she was asked, "Will you follow your father's foot steps as he requested ?" Her simple answer was, "I now adore the man. He deserves whatever I have after God". Are you like Keshav Sen? It pays to build a name, the reward doesn't come quickly but it will come however long it may take and it lasts longer.

If our children are good, they can earn money by their own efforts and if they are bad, they ruin all our earned money. So instead of earning heaps of money focus on good values. Integrity, discipline, self control and fear of God makes a man really wealthy, not a fat bank account.

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind

Should students be rewarded for attending school regularly?

Melody Chao

Rajeev Dehejia

Anirban Mukhopadhyay

Sujata Visaria

A growing literature examines whether incentives can increase effort and improve school performance of underprivileged students. This article discusses an experiment conducted in non-formal schools in the slums of Ahmedabad, Gujarat to assess the effect of a short-term reward scheme for attending a target number of school days. It finds increased attendance but reduced performance and intrinsic motivation amongst those who need the greatest boost in effort and performance.

Should schools 'bribe' students to exert effort? Economists tend to believe that incentives improve outcomes, but educationists and psychologists usually urge caution. Our research with the education NGO Gyan Shala allows us to shed some light on this question (Visaria et al. 2016, Chao et al. 2017).

Underprivileged Indian children have notoriously poor educational outcomes. We know from a large literature that this is due to a lack of adequate school facilities, teacher absenteeism, and poor teacher incentives. Indeed, Gyan Shala's non-formal education centres in the slums of Ahmedabad were set up to give children an alternative to low-quality municipal schools. GyanShala's mission is to provide slum children a high-quality education at low cost. Each classroom has basic school supplies. Teachers have lower qualifications than in municipal schools but receive intensive training and are monitored regularly. Teacher absenteeism is rare, and we found that most teachers were motivated to help students learn. In an independent evaluation conducted in 2010 by the testing authority Educational

Initiatives, Gyan Shala students vastly outperformed their peers in municipal schools on language, mathematics, and science.

Against this backdrop, Gyan Shala's administrators believed that a significant fraction of their students nonetheless underperformed relative to their potential. They argued this was because they did not exert enough effort, as evidenced most clearly by their low school attendance. Quite often this absence could be explained by truancy: skipping school because they wanted to play instead, because it was the festive season, or because their siblings in other schools had the day off. Inspired by previous research where offering inner-city US students monetary rewards for doing school tasks had mixed effects (Fryer 2011), we decided to examine the effects of rewarding Gyan Shala students for attending school regularly.

The experiment

The reward we offered was simple. Students who attended school for at least a target number of days during a pre-specified period were offered a reward of small monetary value, carefully selected to be appealing to the students. Our goal was to strike a balance: to make the reward attractive but to avoid over-rewarding them (Amabile et al. 1986, Eisenberger and Rhoades 2001, Festinger and Carlsmith 1959).

We examined the effect of this scheme on attendance both while the scheme was ongoing, and after it had ended. It seemed reasonable to expect that during the scheme, students would increase effort so as to increase their chance of earning the reward. However, what would happen when the reward was discontinued? On the one hand, students might have become habituated to the higher effort level, or might have discovered the motivation to attend school (or at least that school was more enjoyable – less unpleasant! – than they had thought). In that case, they might have exerted sustained effort even after the incentive was removed (Charness and Gneezy 2009). On the other hand, if the connection of school attendance to a reward made school less enjoyable, this could have lowered children's intrinsic motivation to study and learn (Deci and Ryan 1985, Gneezy et al. 2011).

Prior to our work, the education research in economics had generally not found that incentives lower intrinsic motivation (Bettinger 2012). This may be because most researchers use a blunt test that is unlikely to detect the effect. Suppose an extrinsic reward lowers intrinsic motivation. Suppose further that students with motivation below a certain threshold cut back on effort: they stop attending school, or paying attention in class, or doing homework. If a student has high baseline intrinsic motivation, then even after the reward reduces the motivation, they may still be motivated enough to exert effort.

It is the less motivated student who is likely to fall below the threshold level, and so exert less effort and perform worse after the reward ends. We may not detect the decline in motivation when outcomes are measured as the average of these two subgroups.

Our data relate to 799 students from 68 grade-three classes, spread evenly across all five zones in Ahmedabad where Gyan Shala operated. Investigators made six unannounced visits to the classrooms through the school year. Halfway through the school year – at which point three visits had been conducted – the class supervisors introduced an incentive scheme in randomly selected classes ('treatment group'). They explained to the students that skipping school hindered their ability to keep up with the material and learn subsequent material. They put up on the classroom wall a chart with each student's name and each school date from mid-December to end-January (39 school days), and instructed the class teacher to mark each child's attendance on this chart each day. Anyone who attended 33 or more school days during this period would receive a reward. This constituted a target 85% attendance rate, well above the pre-intervention average of about 75% attendance. The students were then shown samples of the reward: two pencils and a brightly colored eraser shaped like an animal. In the classes that were assigned to the 'control group', the supervisors gave each teacher a similar chart to fill in every day. The chart was not made public, and the supervisor did not make any announcements to the students. We also took great care to ensure that control group classes were geographically distant, so that these students would not learn about the reward scheme being offered in the treatment classes.

Our fourth unannounced visits to the classrooms occurred during the reward period. The fifth and sixth visits took place one month and two months after the reward period ended. Accordingly, we econometrically examine how school attendance responded to the incentive scheme during, one month after and two months after the reward period. We control for each student's time-invariant characteristics, which helps ensure that the results are not confounded by student-specific factors such as generic interest in schooling, living arrangements, parental occupation and so on, that might influence attendance.

Findings

We find, as expected, that while the reward scheme was in place, it increased student attendance by roughly 10%, or an additional four days. However this increase in attendance did not persist after the incentive was removed: in the visits after the reward scheme had ended, attendance was similar for the treatment and control students. At face value, this suggests merely that the scheme did not change students' school attendance habits, or did not make school any more attractive to them than it had been before. However, we were interested in whether the scheme affects more and less motivated students differently. As a proxy for baseline motivation, we used students' baseline attendance, as measured at the first visit. We found that among baseline attenders, the incentive increased school attendance by a statistically significant 6.7 percentage points while it was in effect, and had no effect after it was removed. This is consistent with either no reduction in their intrinsic motiva-

tion, or a very small reduction that did not change their attendance. Among baseline non-attenders, the incentive effect was an imprecisely estimated but larger, 9.3 percentage points when the reward was in effect – although still not large enough to earn the reward. Strikingly however, two months after the reward period had ended these students were 13.9 percentage points less likely to attend school than similar baseline non-attenders in control classes. Thus, in contrast to the previous literature, we found a negative long-term effect of the incentive, but only among students who had low baseline attendance. The incentive lowered their attendance rate in the post-incentive period below what it would have been if no incentive had been offered.

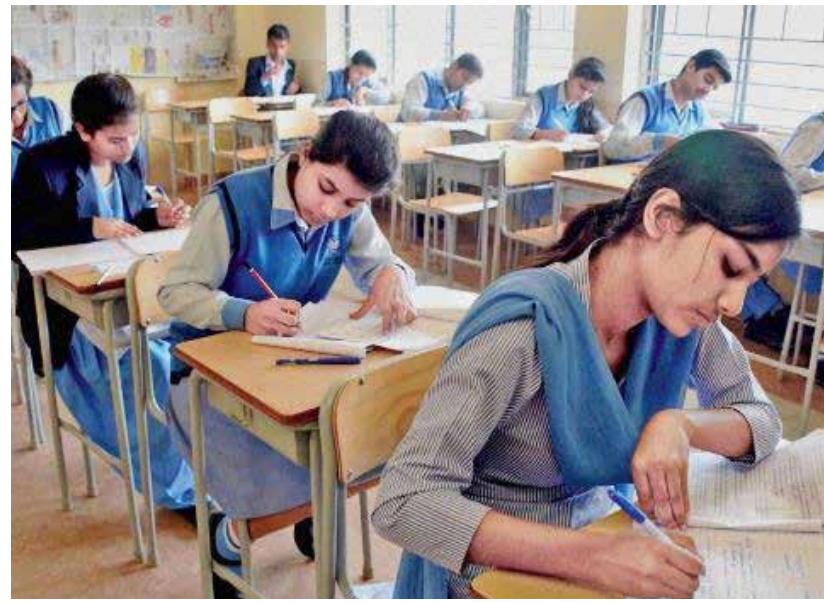

These results were mirrored by effects on test scores. The average student who faced the reward scheme did no differently on an independently administered year-end test than the average control student. However, among baseline non-attenders, those who faced the reward scored a statistically significant 0.59 standard deviations1 lower on the test than those in the control classes. This is largely because they scored lower on mathematics questions of intermediate or high complexity, and on science questions of intermediate complexity. We also saw a concurrent decline in the proportion of students who self-reported that they liked mathematics, and less confidence and optimism that someone could learn skills through practice.

Conclusions

Our study was part of a larger project that aimed to uncover ways to enhance students' motivation to learn. The reward we offered to students had small monetary value, and yet it lowered optimism and liking for school subjects. Our research does not allow us to pin down the exact pathways by which the effects came about. It is possible that the reward scheme in and of itself lowered intrinsic motivation by discouraging students who felt unable to meet expectations to begin with. Indeed, baseline non-attenders who failed to earn the reward lowered their attendance after the scheme ended, whereas those who earned the reward did not. More recent work speculates that extrinsic rewards may cause only short-term declines in intrinsic motivation (List et al. 2018). Unfortunately we were unable to follow our students beyond the end of the academic year, and so we cannot know if intrinsic motivation would have rebounded over the longer term.

However our research suggests that at least in the medium term, conditioning rewards on an absolute target will likely have this effect: often it is the students who need the greatest boost in effort and performance who fail to earn the reward. Relative targets that vary according to students' baseline effort levels might avoid this. However they are harder to administer since they need to vary within a classroom, and may lead to confusion or concerns about perceived unfairness. Our study tests an incentive scheme that might be implemented in a resource-constrained, developing-country setting. It cautions educators and policymakers that the scheme could end up hurting the students whose effort and motivation need the greatest boost, without generating significant benefits for those who are already performing at a high level.

Notes:

- Standard deviation is a measure that is used to quantify the amount of variation or dispersion of a set of values from the mean value (average) of that set.

https://www.ideasforindia.in//topics/human-development/should-students-be-rewarded-for-attending-school-regularly.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

Hong Kong University of Science and Technology
mchao@ust.hk
New York University
rd875@nyu.edu
Hong Kong University of Science and Technology
anirban.mukhopadhyay@ust.hk
Hong Kong University of Science and Technology
svisaria@ust.hk

Help your children Educate better after school with these surprising ways!

Helping your children after school time can be really challenging. Small naughty minds do not want to open their books but to play with their peers. Self- learning and motivation is a part of education and growth. In order to move ahead, one can never ignore this practice. Here are a few surprising ways which will help you educate your children better after school -

1. Focus on Knowledge - Leave the practice of helping your children cram on their subjects. Select knowledge over anything else. Make them remember facts, ask them logical questions. Understanding is quite important as it will help every child in long run. Ask your kids to make notes of their understanding and this way they will grasp the concepts and facts quite smoothly. Let them talk and explain their knowledge. Let them widen their perspective and this is the goal of a better education.

2. Stay in Touch - Many of the working parents personally do not have time to pay attention to their children. Due to a shortage of time, they are not able to pay attention which is required at such crucial stages. Then tutoring their kids after their school is the only option left. So, after that nobody pays attention to what actually is happening in their child's school life. It is a bad habit and one must always look after their children. Even if time is an issue, being a parent it is your duty to keep in touch with them. They must know that you have an eye on them.

3. Breaks are Important - Parents always focus on the studies and activities which is a good thing. But what mistake people commit is that they do not realize the importance of breaks. Taking some time off boosts mental health, let the kids freshen up their mind and lets them prepare for the next lesson. Allow your kids to take equal breaks while they are studying. Ask them to play outdoors on their holiday. Make sure they do not take this leverage for granted. Set limits and promote them to talk and play physically rather than involving them in gadgets.

4. Mistakes happen - even if your child could not do well on their report cards, do not demotivate them. Ask them to do better next time. Suggest ways to learn well, practice more and understand appropriately. Mistakes happen as it is quite natural but repeating them is not acceptable. Be so open that your child can talk to you comfortably. You need to understand what your child is going through. So, talk to them like a friend and think of a solution together. Get involved with your child so that they feel a little more motivated. Reward them for their smallest achievements. This is the best way to treat a child.

So these are a few ways which you can follow to help to educate your children after school. Never force them neither let them take it for granted.

Shweta Rana
https://careguru.in/article/career---opportunity/help-your-children-educate-better-after-school-with-these-surprising-ways/5733

SOGOL
An Experiential Learning
(Students Own Gadget for Outstanding Learning)

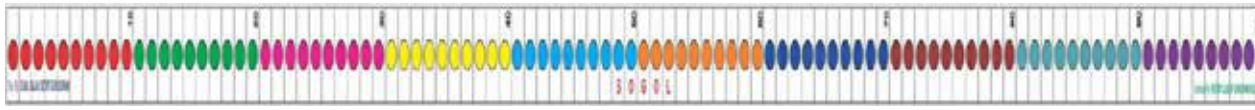

Fig. 2

SOGOL -An instrument for joyful learning

Introduction- Children are not machines. They think but machines do not think. Children have interest and machines do not have interest. They work only as programmed. As children think so we should provide them with interesting and challenging opportunities so that they can think,analyse make rules and learn. Sogol is one of the interesting TLM for this.

In the NCF -2005, it is emphasized to follow a child centered approach with a view that every child can learn Mathematics. But we know that Children learn only when they are interested. Creating interest is a big challenge for teachers. In NCF-2005, it is also expected that teachers should act as facilitators for learning by doing. They should think and give interesting opportunities with appropriate challenges to all children in which they learn through their own experiences. They may be able to think logically and independently and find rules themselves with their own experiences. This experiential learning may be by doing activities with or without using TLM or items of daily life or playing games or puzzles. Innovative TLM SOGOL (Fig.2) creates opportunities.

In this line, measurement is one of the important concepts to be used in daily life and different occupations. However, research studies indicate

Fig. 1

Measurement as one of the most challenging areas of mathematics in elementary school (Clements & Bright, 2003). Lack of estimation skills, and formula based approach without any actual experience creates problems in understanding measurement concept. Innovative TLM SOGOL creates opportunities for Estimation and measurement of length, Perimeter and area, measuring curve etc

C. K. Raju- Towards Equity in Mathematics Education 2. The Indian Rope Trick: Rope vs Compass-Box The rope (or string) is flexible in more ways than one and can be used to do everything that can be done with a compass-box. It can further be used to measure the length of a curved line, impossible with the instruments in a compass box. This is helpful for the measurement of angles, and the subsequent transition to trigonometry and calculus. The rope is also inexpensive, locally-constructible, eco-friendly, and suited to conditions prevalent in countries like India. Hence, it is a superior replacement for the compass-box.

Hans Freudenthal(Freudenthal, 1973, pp. 179-194).

Hans Freudenthal from Netherlands inspired by a different approach delays the teaching of place value and focuses on the development of number sense. The activities chosen, such as the counting on the hundred bead

long ten-structured bead string and the jumps on the empty number line keep the numbers whole without differentiating them on the basis of their place value. This approach is strongly rooted in the conception of Freudenthal about the teaching of numbers. He approached numbers by recognising that there was more than one concept of number, which included counting number, numerosity number and measuring number. He argued very strongly that the numerosity number was 'mathematically insufficient', `mathematically unimportant' and `didactically insufficient' for the teaching of natural numbers. Counting in groups in early years is considered as one of the important concepts for developing understanding of structured counting. Grouping of 10 is most basic being used in decimal number system. Needs enough experience of grouping of 10 for better understanding of place value.

Usha Menon -The teaching of Place Value - cognitive considerations

A counting based, number line using approach as in RME would differ very much from the approaches prevalent in India. Yet experience in the last four years shows that teachers very warmly welcome a teaching aid such as the structured bead string/ ganitmala. This can be understood in terms of the traditional rote practices in which the emphasis is on the chanting of numbers forward and backward as well as on various forms of skip counting. In the traditional practice any form of visual support is given only up to number ten. The development of number sense in the traditional practices can perhaps be understood in terms of the structuring implicit in the number names. Yet these practices can be considered to have the potential to blend with those for developing number sense using the empty number line as a new functional learning system.

Mathematics is known as the study of Patterns. Patterns are now introduced at the Primary level. As we know finding rules while making wonderful patterns creates a foundation for Generalization. While making patterns, children start thinking logically with concentration to find rule. They become interested as they find a challenge in it. There is a need of creating opportunities which give scope for making patterns in an interesting way (fig.4).

Estimation is an area which is rarely discussed in schools.Larry P. Leutzinger Edward C. Rathmell Tonya D. Urbatsch in their paper mentioned that Children with experiences of development of estimation skill in the primary grades will not only become better at estimating and mental computing but also develop a sense of number. This number sense goes far beyond the ability to compute with paper and pencil. It forms an excellent foundation on which problem-solving and logical-reasoning skills can be based. There is a need for providing scope at the primary level.

To address these issues, a low cost multipurpose instrument SOGOL has been designed which can be used as a TLM . It will help in developing understanding of Measurement, place value, number concepts, operations in numbers patterns, fractions, decimal fractions, multiples and factors, LCM and HCF and estimation skills.

BRIEF ABOUT SOGOL

It is a one meter (approx.) long strip (made of flex sheet)with colored dots in groups of ten and each small partition with one dot is of 1cm (approx.) length.

Generally in a classroom, One meter measurement tool is rarely available. Children have a vague idea about meter and centimeter actually how much one meter and centimeter is and further 1m =100 cm. Now with SOGOL, they can have the idea while using it in the activities on measurement. Their estimation skills will improve as they first estimate any length ,e.g., dimensions of bench,window, blackboard then verify with SOGOL(fig.5) and will know how much is 1m and 1cm and relation between meter and cm. Also in counting , they have abstract

SOGOL Fig. 3

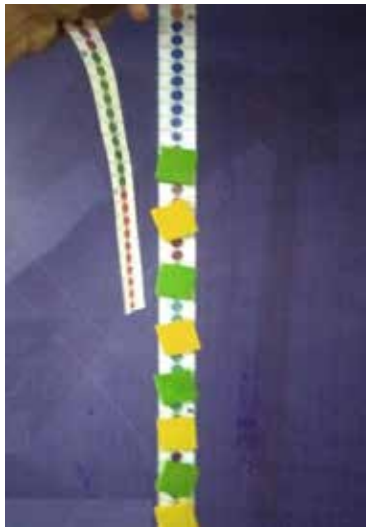

Fig. 4

Fig. 5

idea of place value. Grouping of 10 in SOGOL will help to understand place value and numberness using tiles.

FEATURES OF SOGOL

- It provides the scope of participation of all children as can be easily made available to all children and easy to handle.
- It is a tool for learning by doing. It can be used to measure items of daily life also at home. Helpful in many projects on measurement in and outside class.
- It is used by individuals and is easy to carry. So can be easily used in a classroom to measure length, to find Area and perimeter of a notebook, bench etc.
- It can be a measuring instrument and replacement of Geometry box.
- It is durable and can be used for years with small care.
- It is cheaper and will cost around Rs. 6.
- It works like a slate as we write with sketch pen or marker, we can rub and clean it.
- Even tiles stick on it to make patterns so there is enough scope for ineresting patterns.
- It can be used by the teacher to draw an arc or circle and make an angle on the black board.

In the case of the rope vs the compass-box.

The SOGOL as a rope or a string can be used to do a number of things. 1. By holding it tight (possibly by fastening one end) one can draw a straight line, so it can perform the function of a straight edge. 2. By choosing any appropriate unit, it can be made into a scale. 3. By keeping one end fastened and moving the other end around, one can draw a circle. So the SOGOL (rope) performs the function of a compass. 4. Most importantly, it can be used to directly measure the length of the arc, hence an angle in radians: simply lay the rope along the curve and note the reading. By measuring circular arcs, it also serves as a protractor which measures angles in radians. 5. By marking two points on it a distance can be picked and carried, so a rope (or string) can perform the function of a divider. 6. It is easy to construct a right angle, and by bisecting or trisecting it, it is easy to construct angles of 45° , 30° , and 6°, so it also performs the function of set squares. 7. By fastening two points, one can also draw an ellipse with the rope. This is impossible with the compass-box. So, string (or a piece

Fig. 6

of twine) can be used to do everything that can be done with a compass-box, and something more.

In India, a string with 100 beads popular as Ganit Mala (Usha Menon–Jodogyan) is expensive and is very difficult to handle. SOGOL is very cheap and is easy to handle. Ganit Mala is mostly used for demonstration as is of big size and the smaller one is also difficult to handle. It is durable and handy and may be kept in the pocket. Many games can be played for each Counting, grouping, place value, operations, tables, even odd numbers Patterns, fractions, decimal fractions, Multiples and factors, LCM and HCF, developing estimation and measurement skill ,perimeter and area.

PLAY AND FIND THE RULE TO WIN

Divide whole class in to two groups. One who will reach 20 (or any other target may be 30 ,40 ,50,60 ,70 ,100...) will be the winner .

One group will start by speaking any number up to 4 (this may change every time 2 or 3 or 5 or 6, …) let them say 3. In the beginning, children can mark on the Sogol by a keeping a finger, then other group will add any number up to 4 say 2 now 3+2, i.e., 5. Now comes the turn of first group, they said 4 so now total becomes 5+4 = 9, continue in this manner and one who will reach 20 first will be the winner. Let children play this any number of times and discover the rule to win. This is a very important activity for children to find rule and win.

This can be played by subtracting numbers starting from 20 or any other and one who will reach 0 first, will be the winner.

Multiples and factors, LCM

Also play game of Micky mouse and Pussy cat as in NCERT book class-5. mouse is on 9 and cat is on 4. Cat can jump 4 steps or four dots here and rat can jump 3 steps or dots. Rat can hide in a hole at 27. Whether rat will reach the hole safely or cat will catch the mouse. Take two tiles one as Micky mouse and other as Pussy cat and children jump them simultaneously 3 and 4 steps and see what happens? See the numbers where cat and rat jumped and observe.

Length estimation , Area and perimeter

Ask children to estimate the length of their arm, width of the blackboard and copy etc. verify with SOGOL etc. measure perimeter of notebook, copy, table etc. find area of notebook, copy, table etc. circumference of different

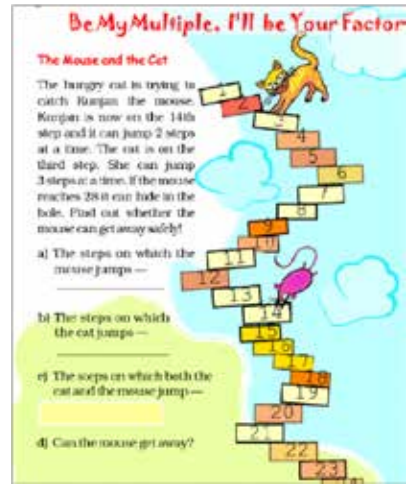

circular objects (use it finding value of pie).

Integer

Take a vertical strip as multi story building (or thermometer) by keeping it vertical and taking zero in the middle that is five colours up (Ist floor, IInd-Floor…) and five colours down (-1 as basement Ist, -2 as basement IInd…) or fifty dots up and fifty dots down.

Also in vertical strip take five colours up or fifty dots up as positive integer 1234… 50 and five colours down or fifty dots down as negative integers -1, -2, -3… -50.

Play the game by throwing two dice one with number and other +, - sign for example + and 5 comes move 5 steps up or if - and 4 comes then 4 move steps down (game given NCERT 7th class book).

Algebra

Introduction to variable - Hide some part from one end and show dots e.g., five and ask how will you write it (hide by rolling the other end so that the child will not know the total).

Fraction

In how many ways you can use two colours to show a fraction 5/7. Similarly many other fractions.

Compare ½, 1/3, ¼ … by making 2 parts, 3 parts, 4 parts etc. by size of the strip SOGOL.

Use one colour as 1/10 equal to 0.1 and use 10 dots (in that colour) out of 100 dots as 0.10 and see both are equal.

CONCEPTS -Counting, grouping, place value, operations, tables, even odd numbers Patterns, fractions, decimal fractions, Multiples and factors, LCM and HCF, developing estimation and measurement skill ,perimeter and area .

Due to its Low cost, durability and easy to handle property ,it is going to be a game changer.To make it available to all, it is suggested that it may be made a part of geometry box/replacement.

References-

1 NCF -2005, positon paper -Teaching of Mathematics
2 Hanste Khelte Text books , Classes 1and 2 Maths Haryana
3 C. K. Raju -Towards Equity in Mathematics Education 2. The Indian Rope Trick: Rope vs Compass-Box
4 Usha Menon -The teaching of Place Value - cognitive considerations paper presented at epiSTEME-1, Dec 2004
5 Freudenthal, H. (1973).Mathematics as an Educational Task.Dordrecht :D.Reidel

Designed and Developed by
Sunil Bajaj
Head ,Maths Department
SCERT Haryana, Gurugram

Quiz

» Malagasy is an Austronesian language spoken by natives of which large island nation? **Madagascar**

» Who was the Greek equivalent to the Roman messenger god Mercury? **Hermes**

» In August 2017, which Brazilian footballer broke the all-time transfer record, when he moved from Barcelona to PSG for a reported □222 million? **Neymar**

» Along with Vietnam, China, Cuba and North Korea - which is the 5th and final country of the world with a governing Communist party? **Laos**

» The Roman province of Lusitania roughly corresponds to the area of which modern-day European nation? **Portugal**

» 'Gelb' translates to yellow in which widely spoken European language? **German**

» Which Trinidadian, against England in 2004 became the only cricketer to surpass 400 runs in a single innings? **Brian Lara**

» British General Elections are traditionally held on which day of the week? **Thursday**

» Fusilli, Farfalle, Rigatoni and Fettuccine are popular varieties off which foodstuff? **Pasta**

» Utah, Colorado, Arizona and which other American state meet at the point known as "The Four Corners"? **New Mexico**

» In 1831, Charles Darwin set sail aboard which ship as their naturalist, during which he would begin to formulate his Theory of Evolution by Natural Selection? **HMS Beagle**

» Despite winning 13 Academy Awards between 2001-2003, which trilogy of films failed to pick up a single acting Oscar? **Lord of the Rings**

» At age 29, who was the youngest man to ever win the Best Actor Oscar for his role in Roman Polanski's 2002 film The Pianist? **Adrien Brody**

» Between 1971 and 1997, the Democratic Republic of the Congo was known by what five-letter name? **Zaire**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-445-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

जनवरी का शिक्षा सारथी अंक पढ़ कर प्रसन्नता हुई। मुख्य संपादक पीके दास जी का लेख आगामी वार्षिक परीक्षा हेतु लाभकारी सिद्ध होगा। अधिगम स्तर सुधार हेतु आप द्वारा दिलाया गया संकल्प निश्चित रूप से बेहतर परिणाम की ओर ले जाने वाला है। कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कुमार जी द्वारा पास-प्रतिशतता बढ़ाने के उपाय शिक्षकों को विशेष मार्गदर्शन प्रदान करने वाले हैं। दिव्यांग हसन की प्रतिभा का परिचय सभी को नई प्रेरणा देने वाला है। सुंदर लिखावट पर लेख विद्यार्थियों को नयी दिशा देने वाला है।

शानदार कलेवर इस अंक का लुभावना है।
शिक्षा सारथी सदा बढ़े यही हमारी भावना है।
परिणाम, कौशल, प्रशिक्षण, सक्षम हैं इसमें समाहित ।
इस अंक में आगे बढ़ने की प्रबल संभावना है।
प्रबल संभावना है।।

डॉ. शिशुपाल
प्रवक्ता संस्कृत
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय चौटाला, जिला- सिरसा

आदरणीय सम्पादक महोदय,
सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का जनवरी अंक पढ़ा। मुखपृष्ठ पर छपी पंक्तियों 'कक्षानुरूप योग्यताएँ दिलाएँगे, हर बालक को सक्षम बनाएँगे' और आकर्षक चित्र ने मन मोह लिया। संपादकीय वास्तव में ही नव-संकल्प लेने की प्रेरणा देने वाला था। माननीय पीके दास व डॉ.राकेश गुप्ता का संदेश हर अध्यापक के मन में प्रेरणा भरने वाला था। प्रदेश में पास-प्रतिशतता को बढ़ाने की कोशिशों को लेकर लिखा गया प्रमोद कुमार का लेख बहुत अच्छा लगा। गोरावड़ विद्यालय में जनसमुदाय के सहयोग से किए जा रहे प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय हैं। दर्शन लाल बवेजा के लेख का सदा इंतजार रहता है। ऊर्जावान शिक्षक सर्वजीत सिंह मान का व्यक्तित्व दूसरों के लिए प्रेरक है। अन्य सामग्री भी मनोरंजक व ज्ञानवर्धक थी। एक श्रेष्ठ अंक के लिए साधुवाद।

सत्य नारायण शर्मा
एसएस अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुंगा
जिला- पंचकूला

नवयुग की मुस्कान बनो तुम

नवयुग की मुस्कान बनो तुम
मानवता के मान बनो तुम
विश्व-क्षितिज पर ध्रुवतारे-सी
भारत की पहचान बनो तुम।
नवयुग की मुस्कान बनो तुम।
चमको चाँद सितारे बनकर
सबकी आँखों के तारे बनकर
मातृभूमि के रखवाले हो
मातृभूमि की शान बनो तुम।
नवयुग की मुस्कान बनो तुम।
सुनना और समझना सीखो
क्या कहना है, कहना सीखो
जीर्ण-शीर्ण मान्यताएँ तोड़ो
जन-जन के अरमान बनो तुम।
नवयुग की मुस्कान बनो तुम।
शीतल मन्द समीर बनो तुम
जन मानस के पीर बनो तुम
तुलसी, सूर, कबीर, जायसी
घनानंद, रसखान बनो तुम।
नवयुग की मुस्कान बनो तुम।
हँसना और हँसाना सीखो
सबको गले लगाना सीखो
जाति, धर्म, सीमाएँ छोड़ो
एक प्यारा इंसान बनो तुम।
नवयुग की मुस्कान बनो तुम।

बलवन्त
ग्राम- जूड़ी, पोस्ट- तेन्दू
राबर्टसगंज, सोनभद्र- 231216 (उ.प्र.)

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

अपनी बालिकाएँ

रेशमी मुस्कान अपनी बालिकाएँ
मान और सम्मान अपनी बालिकाएँ।
प्रेम का, सद्भाव का, बंधुत्व वाला,
गा रहीं मधुगान अपनी बालिकाएँ।
संकटों में हों, अभावों में भले ही,
छोड़तीं मुस्कान अपनी बालिकाएँ।
क्षेत्र कोई भी अछूता अब कहाँ है,
दें न जिस पर ध्यान अपनी बालिकाएँ।
धैर्य से, श्रम से बनातीं जा रही नित,
नव्य-सी पहचान अपनी बालिकाएँ।
मन करे इनकी उतारें आरती हम,
हैं गुणों की खान अपनी बालिकाएँ।

हर किसी के अधर पर बातें हमेशा,
देश का अभिमान अपनी बालिकाएँ।
जान अपने को बड़ा करती न जग में,
स्वयं का गुणगान अपनी बालिकाएँ।
बालकों के साथ कंधा मिला छेड़ें,
प्रगति का अभियान अपनी बालिकाएँ।
दोगुनी परिवार की इज्जत बढ़ा दें,
माँ-पिता की शान अपनी बालिकाएँ।

डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत अध्यापक,
शिक्षा विभाग हरियाणा

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114